चन्दामामा
माँ–बच्चों का मासिक पत्र

Chandamama, December '50 Photo by B. N. Prasad

काशी

गोदी का बच्चा
प्रत्येक शिशु एक खिलौना है। इस कारण उसकी देखभाल बहुत यत्नपूर्वक होनी चाहिये। शिशुओं को स्वस्थ और सबल बनाने के लिए यह अत्यावश्यक है कि उनके शारीरिक विकास पर पूरा ध्यान दिया जाय। उनके समुचित विकास में "लाल-शर" पूरी पूरी मदद पहुंचाता है। "लाल-शर" के सेवन से शिशु और शिशु की माता, दोनों को ही फायदा पहुंचता है।
लालशर
डाबर
(डा. एस. के. बर्मन) लि.
कलकत्ता

चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र
संचालक : चक्रपाणी

एक दिन श्रीदमन, सुबल,
सुधाम आदि सखाओं ने बलराम और कृष्ण
के पास आकर कहा—'हे कृष्ण! वृन्दावन से
थोड़ी दूर पर ताड़ों का एक बगीचा है। वहाँ ताड़ों पर
पके हुए फल इतने लगे है कि उनकी सोंधी महक
दूर दूर तक फैल रही है। उधर जाते ही लोगों के मुँह से लार
टपकने लगती है। लेकिन क्या किया जाए? धेनुकासुर नामक एक
राक्षस गधे के रूप में उस जङ्गल में रहने लगा है। वह किसी को उन
पेड़ों के पास फटकने भी नहीं देता।' यह सुनते ही बलराम और कृष्ण
तुरन्त वहाँ गए। पेड़ों पर ताड़ के कजरारे फल लटक रहे थे। बलराम
ने पेड़ों को पकड़ कर हिलाना शुरू किया। तुरन्त सैकड़ों फल जमीन
पर टपकने लगे। इतने में धेनुकासुर दौड़ते हुए आया और अपनी
टाँगों से बलराम को लताड़ने लगा। तब बलराम ने अपने हाथों से
उसकी टाँगें पकड़ लीं और उसे आसमान में उछाल दिया। गधा
पतङ्ग की तरह आसमान में उड़ा और धड़ाम से जमीन
पर गिर कर ठण्डा हो गया। गोप-बालक अब
निडर होकर खुशी से उछलते हुए, मजे से
ताड़ के फल खाने लगे।

वर्ष 2—अङ्क 4
दिसम्बर 1950

एक प्रति 0-6-0
वार्षिक 4-8-0

कृतज्ञ सिंह

किसी समय जब नीच दासता
का था जग में खूब प्रचार,
एन्ड्रोक्लीज़ नाम का लड़का
ढो न सका जीवन का भार।

एक रात मालिक के घर से
भागा वह जङ्गल की ओर।
भूखा – प्यासा गिरता, उठता
भटक विपिन में गया सुदूर।

इतने में उसके कानों में
पड़ी शेर की गरज–दहाड़।
और शेर भी हुआ सामने
छोड़ घने झाड़ों की आड़।

एन्ड्रोक्लीज़ होश खो बैठा
तज निज प्राणों की सब आस।
पर आश्चर्य! शेर लँगड़ाता
खड़ा हो गया उसके पास।

पंजा उसका झुका देख कर
उठा लिया उसने निज हाथ।
काँटा एक चुभा देखा तो
लिया निकाल दया के साथ।

'बैरागी'

दर्द मिटा, वह शेर खुशी से
चला गया फिर अपनी राह।
एंड्रोक्लीज़ रहा वन में कर
मुश्किल से कुछ रोज निबाह।

इतने में सैनिक आ पहुँचे
उस की करते खोज–तलाश।
पकड़ लगा कर हथकड़ियाँ झट
ले पहुँचे काज़ी के पास।

दिया फैसला काज़ी ने—'दो
बना इसे शेर का शिकार।'
एन्ड्रोक्लीज़ सीखचों में था
और खुला पिंजड़े का द्वार।

झपटा शेर हाय! पर, यह क्या
भीगी बिल्ली सा बन कर,
पूँछ हिलाता लोट गया वह
उस बालक के चरणों पर।

शेर वही था दोस्त पुराना,
वह न भुला पाया एहसान।
चकित हुआ काज़ी भी, उसने
बचा दिए लड़के के प्राण।

जैसे को तैसा

['अशोक' बी० ए०]

चम्पतपुर में चम्पत नामक
रहता था चालाक सुनार!
गहने गढ़ता और बेचता
'शिव-शिव' कहता बारंबार!
पत्नी बोली –'बहुत दिनों से
मैंने जरा न घी खाया!'
चम्पत बोला–'मैं तो अब तक
सपने में न देख पाया!
मत घबराओ, मैं ताँबे की
हँसुली अभी बनाता हूँ!
उस पर असली सोने का मैं
पानी अभी चढ़ाता हूँ!
जब बाजार लगेगा अगला
तब मैं इसे बेच दूँगा!
बदले में घी वाले से मैं
अच्छा सा घी ले लूगा।'
लिए हाथ में घी का मटका
एक जाट बोला—'भाई!
हँसुली देकर घी यह ले लो,
चीज़ बहुत अच्छी आई।'
चम्पक ने घी लेकर हँसुली
उसी जाट को दे डाली!
सुदिन हुई चम्पक की पत्नी
मानो कोई निधि पा ली।

एक कढ़ाई में उसने उस
घी को इधर उड़ेला था—
मटके में से गोबर निकला
जो ढेले का ढेला था।
चम्पक बोला—'खूब रही यह,
वह भी बहुत चतुर निकला!'
सोच रहा था जाट उधर यह–
'मैंने खूब किया बदला।'
हँसुली पहिन जाट की पत्नी
गई कुएँ पर जल भरने।
वहाँ औरतें जितनी भी थीं
सब मुँह फेर लगीं हँसने।
'मुझे देख कर क्यों हँसती हो
ऐसी क्या है बात हुई?'
सबने कहा—'बात है बेढ़ब
हँसुली दिखती, अजब, नई।
ताँबे की तो यह हँसुली है
ऊपर सोने का पानी!
तुमने अपने मन में शायद
केवल सोने की जानी।'
जाना जब रहस्य हँसुली का
जाटराम तब पछताए!
जो जैसी करनी करता है
वह वैसा ही फल पाए।

पुराने जमाने में एक छोटा सा गाँव था। उस गाँव के रहने वाले सभी अहीर थे। तुम तो जानते ही हो कि अहीर लोग बड़े मेहनती होते हैं। क्या अमीर, क्या गरीब सभी मेहनत करते हैं। समय बिलकुल बर्बाद नहीं करते। सबेरे से शाम तक वे खेती-बारी का काम करने, गाय-भैंस चराने, दूध दुहने आदि में ही लगे रह जाते हैं। रात के आठ बजे तक उन्हें बिल्कुल फुरसत नहीं मिलती। तब खा-पीकर या तो चौपाल में या मंदिर में या मुखिया के घर पर बड़े-बूढ़े सभी जमा हो जाते हैं।

वहाँ बैठ कर वे खेती-बारी की या गाँव के हाल-चाल की बातें करते हैं। तब तक दस-ग्यारह बज जाते हैं। सब लोग उठ कर अपने अपने घर चले जाते और निश्चिन्त होकर सो जाते हैं। फिर सबेरे पौ फटने के पहले ही उठ कर अपने अपने काम में लग जाते हैं। इस तरह उस गाँव के अहीर सब भाई भाई की तरह आपस में मिल-जुल कर रहते थे। कभी लड़ाई-झगड़ा नहीं करते थे। कभी पर्व-त्यौहार आ जाता तो वे रामायण या कथा बँचवाते और सब मिल कर कथा-वाचक का सत्कार करते।

एक साल गाँव के बड़े-बूढ़ों ने जमा होकर सोचा कि इस साल कौन सा तमाशा कराया जाए? बहुत सोच-विचार कर आखिर सबने कठपुतलियों का नाच कराने और कथा बचवाने का निश्चय किया। उस रात को सात बजते बजते सब लोग मंदिर के पास जमा हो गये। इतने लोग आये कि जगह बिलकुल नहीं रही।

सोमचन्द्र

कठपुतलियों का नाच शुरू करते करते दस बज गये। नाच देख कर सब लोग फूले नहीं समाए। पुतलियों को नाचते देख कर हँसते हँसते लोगों के पेट में बल पड़ गए। आखिर बूढ़े अहीरों ने खुशी के मारे मूँछों पर ताव देते हुए कहा कि अब कठपुतलियों का नाच बंद करके कथा बँचवाना चाहिए। तब कथक उठ कर राग आलापते हुए कथा बाँचने लगा।
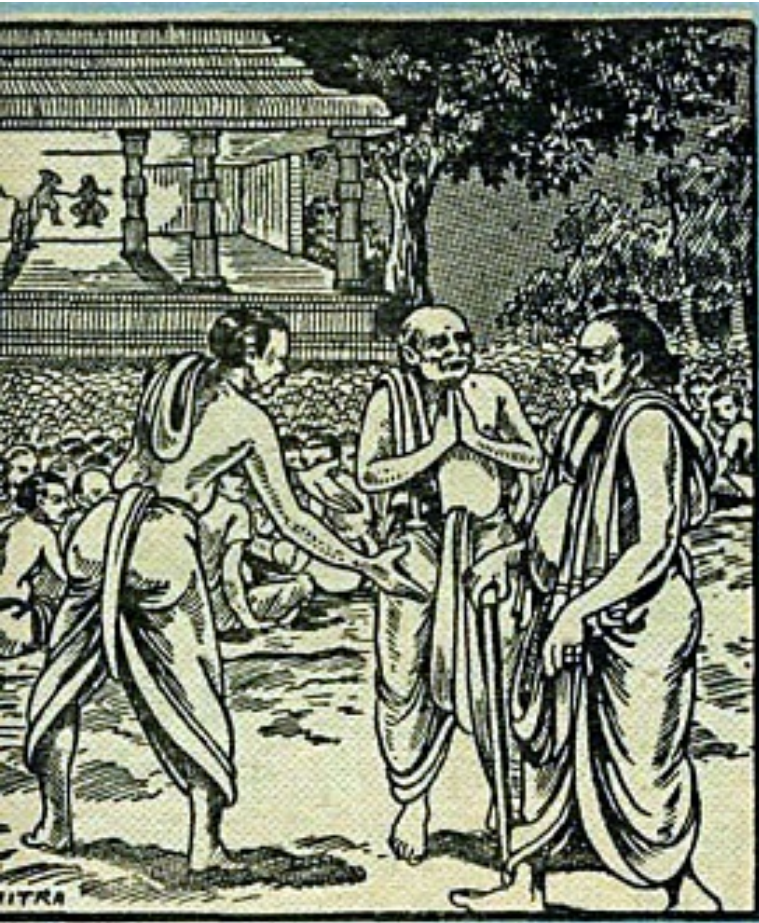
लेकिन इतने में वहाँ रामभजन महतो आ गए। रामभजन महतो क्या मामूली आदमी थे? नहीं, वे बहुत अमीर थे। गाँव के बहुत से लोग उनके कर्जदार थे। उनकी कृपा के बिना बहुतों के घर चूल्हे भी नहीं जलते।

रामभजन महतो ने आते हुए कहा—'जरा देर हो गई। काम कुछ ऐसा आ पड़ा कि जल्दी नहीं आ सका।'

'कोई बात नहीं, आइए! आइए!' कहते हुए कुछ लोगों ने उन्हें सब के आगे की पंगति में ले जाकर बिठा दिया। पुतलियों का नाच सब को पसंद आया था। भला रामभजन महतो उस को देखे बिना कैसे रह सकते थे? इसलिए उनके लिए फिर कठपुतलियाँ नचाई गईं। उस के बाद कथावाचक ने फिर कथा बाँचना शुरू किया।

इतने में माधव महतो आ गए। माधव महतो उस गाँव के वैद्य थे। उनकी दवाइयाँ ही जमदूतों को उस गाँव में पैर नहीं रखने देती थीं। ऐसी हालत में अगर माधव महतो की खातिर न हुई और कहीं उन्हें गुस्सा आ गया तो?

'मरीजों को देख कर आते आते देरी हो गई। क्या करूँ? बिल्कुल फुरसत नहीं

मिलती। किसको निराश करूँ!' महतो ने बड़े अफ़सोस के साथ कहा।

लेकिन कुछ लोगों ने बड़े सम्मान के साथ उन्हें ले जाकर आगे की पांत में बैठा दिया।

'हाँ, फिर कठपुतलियाँ नचाना शुरू करो।' कुछ लोगों ने कहा। फिर पुतलियाँ नचाई गईं। लोग खूब हँसने लगे।

थोड़ी देर बाद फिर कथा-वाचक ने कथा बाँचना शुरू किया।

लेकिन इतने में लोगों में जोर की काना-फूसी होने लगी कि धनीराम महतो आ रहे हैं।

धनीराम महतो उस गाँव के मुखिया थे। बहुत बूढ़े और बड़े होशियार आदमी थे। गाँव के बच्चे-बूढ़े सभी उनकी आज्ञा का पालन करते। कुछ लोगों ने उठ कर उनकी अगवानी की। कथा रुक गई। लोग और भी जोर से काना फूसी करने लगे।

धनीराम महतो ने बड़े दुख के साथ कहा—'हाय! कथा शुरू हो गई क्या? कितनी देर हुई शुरू किए?' उन्होंने मुँह लटका कर पूछा।
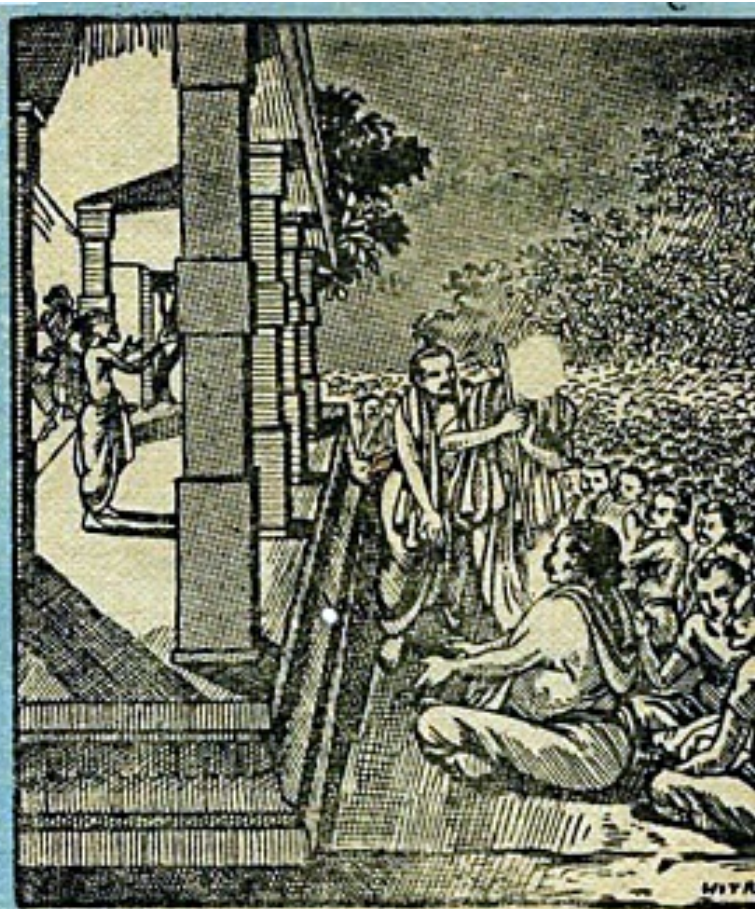
'कथा तो शुरू हो गई। लेकिन हर्ज क्या है? फिर से शुरू करेंगे।' कुछ लोगों ने कहा और धनीराम महतो को सब के आगे ले जकर बिठा दिया।

तब किसी ने उठ कर कहा कि फिर से पुतलियों का नाच शुरू हो—महतो भी देखेंगे। फिर पुतलियाँ नचाई गईं।

आखिर थोड़ी देर बाद कथा-वाचक ने फिर राग आलाप कर कथा बाँचना शुरू किया।

इतने में पटवारी जी आ गए। भला, अब वे लोग क्या करते? पटवारी को नाखुश करके उस गाँव में रहना क्या था; जल में रह कर मगर से बैर मोल लेना था। इसलिए कथा रोक दी गई। कुछ लोगों ने उठ कर पटवारी जी का स्वागत किया और उन्हें भी आगे ले जाकर बैठा दिया। बड़ों के कहने से फिर पुतलियों का नाच शुरू हुआ।

तब तक लोग पुतलियों का नाच देख देख कर ऊब गए थे। किसी का ध्यान उनकी ओर न था। बहुत से लोग आपस में गप-शप कर रहे थे और एक दूसरे की ओर इशारा करके मजाक उड़ा रहे थे। कुछ लोग जम्हाइयाँ ले रहे थे, कुछ लोग ऊँघ रहे थे और कुछ लोग जमीन पर पड़े पड़े खुर्राटे ले रहे थे। रात भी बहुत बीत गई थी।

इस तरह कथा शुरू करते ही कोई न कोई आ जाता। लोग उसे खातिर के साथ ले जाकर आगे बैठा देते और उसके लिए फिर पहले से सब कुछ दुहराया जाता। रात भर यही हाल रहा।

आखिर रात बीत चली। मुर्गा बोलने लगा। अहीर लोग सब उठ कर अपने अपने कामों पर चले गए। रात भर कथा शुरू ही होती रही। वे बेचारे क्या करते? कथा शुरू होते ही कोई न कोई महतो आ जाते। कोई न कोई कहता कि पुतलियाँ फिर से नचाओ। इस तरह रात भर कोई न कोई आते ही रहे और सवेरे तक कथा शुरू ही होती रही। बच्चो! इससे मालूम होता है कि जो लोग दुनियाँ में सबको खुश करना चाहते हैं उनकी अन्त में यही हालत होती है।

धीरसिंह की कहानी

जब धीरसिंह ने अन्धों के बारे में पूछा तो बूढ़े ने यों कहना शुरू किया—'उन्हें अन्धे नहीं, सच पूछा जाए तो अन्धीं कहना चाहिए। वे तीन बहनें हैं। तीनों अन्धीं हैं। उनके आँखें हैं ही नहीं। लेकिन हरेक के माथे पर ठीक बीचों-बीच एक सूराख है। तीनों के लिए एक ही आँख है। तीनों बारी बारी से उसी एक आँख को अपने अपने माथे के सूराख में रख कर देखा करती हैं। फिर भी उससे देखने वाली की नजर मामूली आँख वालों से हजारों गुना पैनी होती है। हरेक को उस आँख से दो मिनट तक देखने का हक रहता है। इसलिए तीनों बारी बारी से दो दो मिनट तक उस आँख का उपयोग करती हैं। अगर उनमें से कोई दो मिनट से ज्याद उस आँख को अपने पास रख ले तो दूसरी झगड़ने लगती है। उस आँख के बिना तीनों एक मिनट भी नहीं रह सकतीं। अब तुम्हें उस आँख को ले लेना हो तो कैसे लोगे?' बूढ़े ने पूछा।

'अच्छा तो, वे रहती कहाँ हैं?' धीरसिंह ने कहा।

'वे सूरज या चाँद की रोशनी में बाहर नहीं आ सकतीं। इसलिए साँझ के झुटपुट में वे थोड़ी देर के लिए बाहर आ जाती हैं। जो कोई दिखाई देता है उसे खाकर तुरन्त गायब हो जाती हैं।' बूढ़े ने जवाब दिया।

यों बातें करते करते सूरज डूबने लगा। अन्धेरा छाने लगा। दोनों एक बड़े मैदान में

‘क्या मैं जानती नहीं कि मेरे बाद तुम्हारी बारी है? लेकिन जरा ठहरो तो! मुझे मानुस की महक आती है। मालूम होता है कि उन झाड़ियों की आड़ में कोई छिपा है। जरा देखने तो दो!’ बीच वाली बुढ़िया ने कहा।

‘वाह! हमेशा तुम्हीं देखा करोगी क्या? क्या मैं नहीं देख सकती कि झाड़ी में कौन छिपा है? ला, बारी मेरी है; आँख मुझे दे दे! मैं देख कर बता दूँगी कि वह कौन है?’ तीसरी बुढ़िया ने कहा।

जा पहुँचे। वहाँ छोटी छोटी कँटीली झाड़ियों के अलावा और कुछ न था!

‘देखो, वे तीनों बुढ़ियाँ यहीं आती हैं। इसलिए अब हमें बड़ी सावधानी से काम लेना है।’ बूढ़ा बोल ही रहा था कि कहीं से पैरों की आहट आई। दोनों झाड़ियों की आड़ मे छिप गए। तीनों अन्धी बहनें वहाँ आ गईं। तीनों बहुत बूढ़ी थीं। उस समय बीच वाली बुढ़िया आँख लगाए थी। झट तीसरी बुढ़िया ने कहा—‘बहन! दो मिनट तो हो गए। अब मेरी बारी है!’

यह झगड़ा खतम होते होते तीसरी की बारी भी बीत गई। अब पहली की बारी थी। इसलिए उसने कहा—‘तुम दोनों फजूल क्यों झगड़ती हो? लाओ, आँख मुझे दे दो! अब मेरी बारी है।’

यह सुन कर बीच वाली को गुस्सा आ गया। उसने आँख निकाल कर हथेली पर रख ली और कहा—‘अब झगड़ा क्यों? आँख मेरी हथेली पर है। तुम दोनों में जो चाहो उसे ले लो!’ यह कह कर वह वहाँ

बैठ गई। अब तीनों अन्धीं थीं। आँख बीच वाली के हाथ में थी। लेकिन बाकी दोनों को दिखाई नहीं पड़ता था कि हथेली कहाँ है? इसलिए वे इधर-उधर टटोलने लगीं। तब बूढ़े ने धीरसिंह के कान में कहा—'यही मौका है! दौड़ जाओ और आँख को उठा लाओ!'

धीरसिंह दौड़ कर चुपचाप आँख उठा लाया और बूढ़े के हाथ में रख दी। हथेली से आँख के उठते ही बीच वाली अन्धी ने समझा कि दोनों बहनों में से किसी ने उठाई है। दोनों आपस में झगड़ने लगीं। हरेक कहने लगी कि आँख मेरे पास नहीं है। बस, अब उनको एक दूसरे पर शक हो गया। हरेक बुढ़िया यही कहती थी कि आँख किसी ने छिपा ली है। तीनों जोर जोर से चिल्लाने लगीं। बूढ़े को उन पर तरस आ गया। पास जाकर उसने कहा—'पागल औरतो! क्यों बेकार झगड़ती हो? आँख तो मेरे पास है। मेरा तुम से एक काम

है। इसीलिए मैंने आँख उठा ली। सुनता हूँ कि यहीं नजदीक ही एक तीन सिर वाला राक्षस रहता है। जब तक तुम मुझे उसके पास जाने की राह नहीं बताओगी, तब तक यह आँख तुम लोगों को नहीं दूँगा।'

'कौन हो जी तुम? बड़े ढीठ मालूम होते हो? आँख चुरा कर चले हो उलटे हमें ही धमकाने? हम किसी तीन सिर वाले राक्षस को नहीं जानतीं। हमारी आँख हमें लौटा दो और अपनी राह जाओ!' उन बूढ़ियों ने कहा।

'मेरे साथ यह चालाकी नहीं चल सकती। तुम को मालूम है कि वह राक्षस कहाँ रहता है। अगर तुम यों ही बातें बनाती रहोगी और उसका पता नहीं बताओगी, तो देखना—आँख लेकर मैं यहाँ से चल दूँगा!' बूढ़े ने धमकाया।

'वाह! यह कैसी जबर्दस्ती है? राक्षस का पता अगर हमें मालूम होता तो बता न देतीं? हमें डराने-धमकाने से क्या फायदा?' पहली बूढ़ी ने कहा।
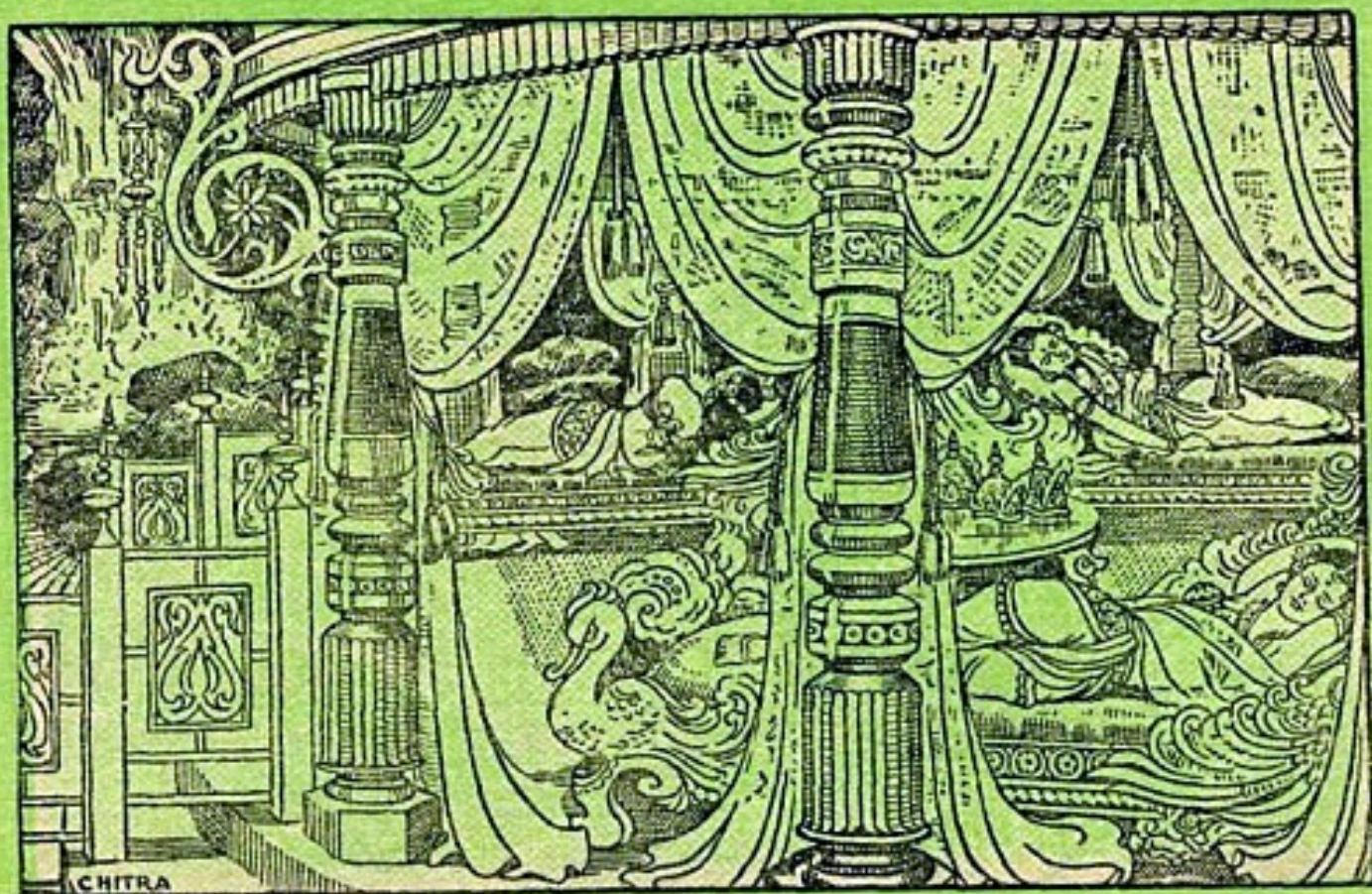
‘इसे धमकाने दो न? देखें, हमारी आँख यह कैसे उठा ले जाता है?’ दूसरी बुढ़िया ने कहा।

लेकिन बूढ़ा जब चुपचाप आँख लेकर वहाँ से चल पड़ा तब वे हार कर बोलीं—‘यहाँ से दक्खिन की ओर जाओ; कुछ दूर जाने पर तुम्हें एक बड़ा तालाब मिलेगा। उससे थोड़ी दूर पर एक महल में तीन देव-कन्याएँ रहती हैं। रात होते ही वे इंद्र-लोक से उतरती हैं और उस तालाब में किलोलें करके नहाती हैं। रात भर उस महल में आराम करके सबेरा होने के पहले फिर अपने लोक को लौट जाती हैं। तीन चीज़ें उन देव-कन्याओं के पास हैं। राक्षस को मारने के लिए तुम्हें वे तीनों चीज़ें चाहिए। एक तो मन्त्र-मुकुट, दूसरी टेढ़ी तलवार और तीसरी जादू की थैली। वे सोते वक्त अपने मुकुट उतार कर खूँटी पर टाँग देती हैं। मुकुट पहने बिना वे देव-लोक नहीं पहुँच सकतीं। इसलिए अगर तुम किसी तरह उनके मुकुट चुरा लो तो वे तुम्हें सब कुछ देने को तैयार हो जाएँगी। उन्हीं की कृपा से तुम राक्षस को मार सकोगे।’ उन बूढ़ियों ने कहा।
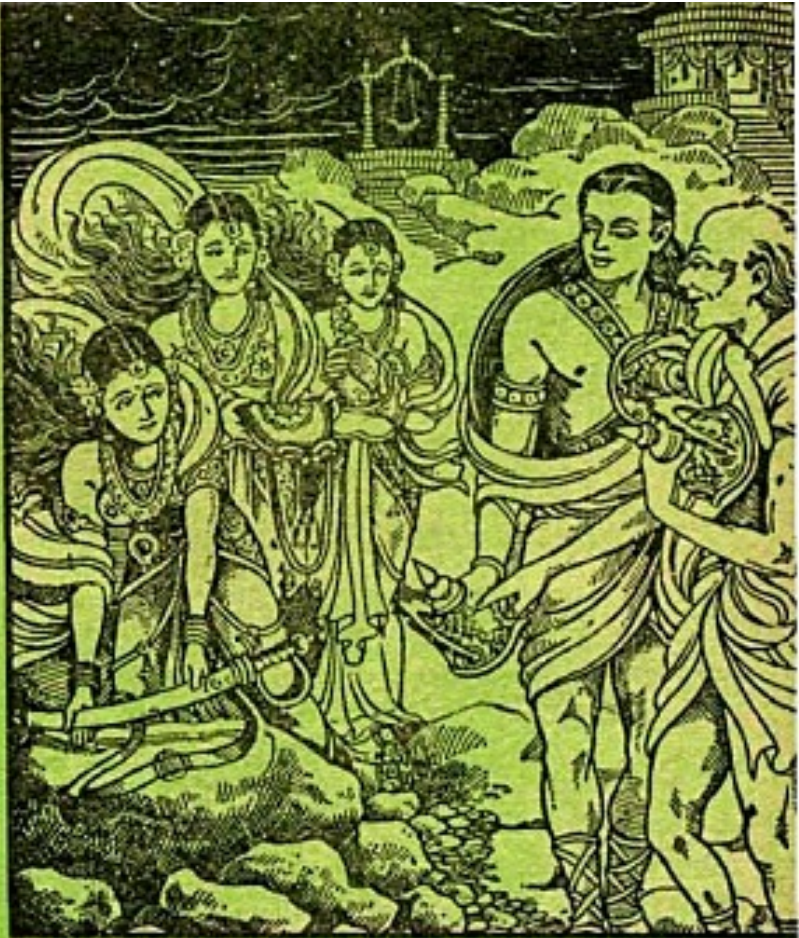
‘अच्छा, तो मैं तुम्हारी आँख पैरों के पास रख देता हूँ। ढूँढ़ लो!’ यह कह कर बूढ़े ने आँख वहाँ रख दी। तुरंत वे दोनों वहाँ से उड़ चले। अगर इसके पहले ही आँख बूढ़ियों के हाथ लग जाती तो उनकी ख़ैर न थी।

बूढ़ियों की बताई हुई राह पर चल कर थोड़ी देर में वे एक तालाब के पास पहुँचे।

जाकर मौज से चिल्ला-चिल्ला कर गाने लगे। इस हो-हल्ले से देव-कन्याओं की नींद उचट गई और वे हड़बड़ा कर मुकुट लेने दौड़ीं। लेकिन वहाँ मुकुट कहाँ? व्याकुल होकर इधर-उधर खोजने लगीं। इतने में उन्हें तालाब किनारे मौज से गाते हुए दो आदमी दिखाई दिए। मुकुट उनके हाथ में थे। यह देख कर उनको बहुत क्रोध आया। वे लपक कर उनके पास गईं। लेकिन ये दोनों उनसे क्या कम थे? उन्हें खूब नजदीक

उसकी बगल में ही संगमर्मर का बना हुआ एक महल दिखाई दिया। उस महल में तीन सफेद पलंगों पर तीनों देव-कन्याएँ गाढ़ी नींद में पड़ी थीं। रात ज्यादा न थी। थोड़ी ही देर में पौ फटती और तीनों उठ कर अपने लोक को चली जातीं। देर करने से सारा मामला बिगड़ जाता। दीवार पर मुकुट चमक रहे थे। बूढ़े ने उनकी तरफ इशारा किया। धीरसिंह दबे पाँव गया और चुपके से मुकुट उठा लाया। अब देव-कन्याओं के चले जाने का कोई डर तो था नहीं! बस, दोनों तालाब के किनारे

आने दिया और पलक मारते आसमान में उड़ कर मुकुट दिखा दिखा कर उन्हें खूब चिढ़ाने लगे। बेचारी परेशान हो गईं। मुकुट हाथ में आए बिना वे कुछ नहीं कर सकती थीं। इसलिए रोने-कलपने लगीं—'हमारे मुकुट हमें दे दो!'

तब बूढ़े ने उनसे कहा—'अच्छा, मुकुट हम तुम्हें लौटा देंगे। लेकिन इसके बदले तीन चीज़ें देनी पड़ेंगी। जब तक तुम हमें वे चीज़ें नहीं दोगी, मुकुट भी नहीं मिलेंगे।'

'अच्छा, बोलो—तुम क्या चाहते हो?' देव-कन्याओं ने पूछा।

तब बूढ़े ने अन्धी बूढ़ियों की बताई हुई तीनों चीज़ें माँगीं। लाचार होकर पहली देव-कन्या ने थैली ला दी। वह मृग-चर्म की बनी हुई थी और उस पर सोने का काम किया हुआ था। दूसरी जाकर एक तलवार ले आई। वह बड़ी तेज थी और चमचम कर रही थी। तीसरी ने लोहे का बना हुआ एक मुकुट ला दिया। तीनों चीज़ें बूढ़े के हाथ में देकर देव-कन्याओं ने कहा—'लो, अपनी चीज़ें! अब हमारे मुकुट हमें दे दो!'

तब बूढ़े ने वे तीनों चीज़ें ले लीं और उनके मुकुट उन्हें दे दिए। फिर वे वहाँ से उड़ चले। देव-कन्याएँ भी अपने अपने मुकुट पहन कर मन ही मन भगवान को धन्यवाद देती वहाँ से चली गईं। क्योंकि वे मुकुट उन्हें फिर न मिलते तो उनको कभी इन्द्रलोक जाना नसीब न होता।

थोड़ी देर में सवेरा हो गया। वह बूढ़ा और धीरसिंह दोनों नीचे उतर कर एक जगह बैठ गए और आराम करने लगे। धीरसिंह ने घर से चलने के बाद अब तक कुछ खाया पिया न था। उसे बड़े जोर की भूख लग रही थी। उसने चारों ओर नजर दौड़ाई। लेकिन कहीं कुछ खाने लायक चीज़ न दिखाई दी। तब उसने बूढ़े से पूछा कि भूख मिटाने का कोई उपाय बताओ।

यह सुनते ही बूढ़ा ठटा कर हँसने लगा। तब धीरसिंह को बहुत गुस्सा आया। 'भूख से मेरा दम निकला जा रहा है और तुम्हें हँसी सूझती है? शायद तुम्हें भूख नहीं लगती होगी! पंख वाले जूतों की ही तरह तुमने भूख मिटाने का भी कोई उपाय ढूँढ लिया होगा!' उसने कहा।

'अरे भई! मैं इसलिए नहीं हँसता हूँ। हमने इतनी मेहनत करके जो तीन चीज़ें कमाई हैं क्या उनका कोई उपयोग नहीं है? तुम्हें बिना समझे-बूझे भूख से चिल्लाते देख कर मुझे हँसी आ गई। देखो, यह थैली जब तक हमारे पास रहेगी तब तक हमें दुनियाँ में किसी चीज़ की कमी न होगी! लो!' यह कह कर बूढ़े ने वह थैली नीचे उलटी। तुरंत उसमें से तरह तरह की खाने की चीज़ें निकल पड़ीं। धीरसिंह ने खूब खाया। तब बूढ़े ने देव-कन्या की दी हुई तलवार उसके हाथ में दे दी और पुरानी तलवार फेंकवा दी। फिर उसने मन्त्र-मुकुट देते हुए कहा— 'लो, इसे पहन लो! देखो, क्या तमाशा होता है?' यह कह कर उसने मुकुट उसे पहना दिया। तुरन्त धीरसिंह आँखों से ओझल हो गया। बूढ़े को सिर्फ़ हवा में लटका हुआ मुकुट दिखाई देने लगा। 'अरे! तुम कहाँ चले गए!' बूढ़े ने पुकारा।

'यहीं तुम्हारी बगल में तो हूँ।' धीरसिंह ने जवाब दिया।

'क्या मैं तुम्हें दिखाई देता हूँ?' बूढ़े ने धीरसिंह से पूछा।

'क्यों न दिखाई दोगे? क्या मैं तुम्हें दिखाई नहीं देता?' धीरसिंह ने अचरज के साथ पूछा।

तब बूढ़े ने कहा—'नहीं! मुझे सिर्फ़ तुम्हारे सिर का मुकुट दिखाई देता है। जब तुम राक्षस से लड़ने जाओगे तो इसी तरह तुम तो उसे देख सकोगे; लेकिन वह तुम्हें नहीं देख पाएगा। देख ली न इन चीज़ों की करामात?' इस तरह मन बहलाने की बातें करते हुए दोनों फिर वहाँ से आगे बढ़ चले। [सशेष]

एक गाँव था। उस गाँव में एक बकरी थी और उस बकरी के छः बच्चे थे। वे छहों देखने में बहुत सुन्दर थे। उनकी उछल-कूद देख कर सबको खुशी होती थी। बकरी अपने बच्चों को बहुत प्यार करती थी। रोज़ वह गाँव के नजदीक के एक जंगल में जाकर उनके लिए चारा ले आती थी।

एक दिन उस बकरी को जंगल में एक भेड़िए ने देख लिया। वह भेड़िया उस के पीछे पीछे आया और उसके घर का पता जान कर चला गया।

बकरी के बच्चों का सबसे बड़ा दुश्मन तो भेड़िया ही होता है! इसलिए पहले ही से बकरी ने अपने बच्चों को चेता दिया था कि उसकी गैरहाजिरी में घर का दरवाजा खुला न रखा जाए। उसने अपने बच्चों को बाहर जाकर घूमने-फिरने से भी मना कर दिया था। उसने यह भी साफ-साफ कह दिया था कि भेड़िए आकर दरवाजा खटखटाएँगे। इसलिए बिना जाने-बूझे दरवाजा नहीं खोलना चाहिए। इतने में बकरी के सबसे छोटे बच्चे के मन में एक सन्देह पैदा हुआ। उसने पूछा—'हमें यह कैसे मालूम हो कि दरवाजा तुम खटखटा रही हो या भेड़िया?'

तब उसकी माँ ने जवाब दिया—'तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन याद रखो—भेड़िए की आवाज भर्राई हुई सी होती है। इसके अलावा उसके पैर कोयले की तरह काले होते हैं। मेरे पैर देखो—कितने सफेद हैं?' इस तरह उसने उन्हें बहुत देर तक समझाया। तब से बकरी के बच्चे माँ के जंगल जाने के बाद दरवाजा कभी खुला नहीं रखते थे।

दूसरे दिन भेड़िए ने जो अब बकरी के रहने की जगह जान गया था, आकर देखा तो किवाड़ लगे हुए थे। तब उसने कहा—

अजय कुमार
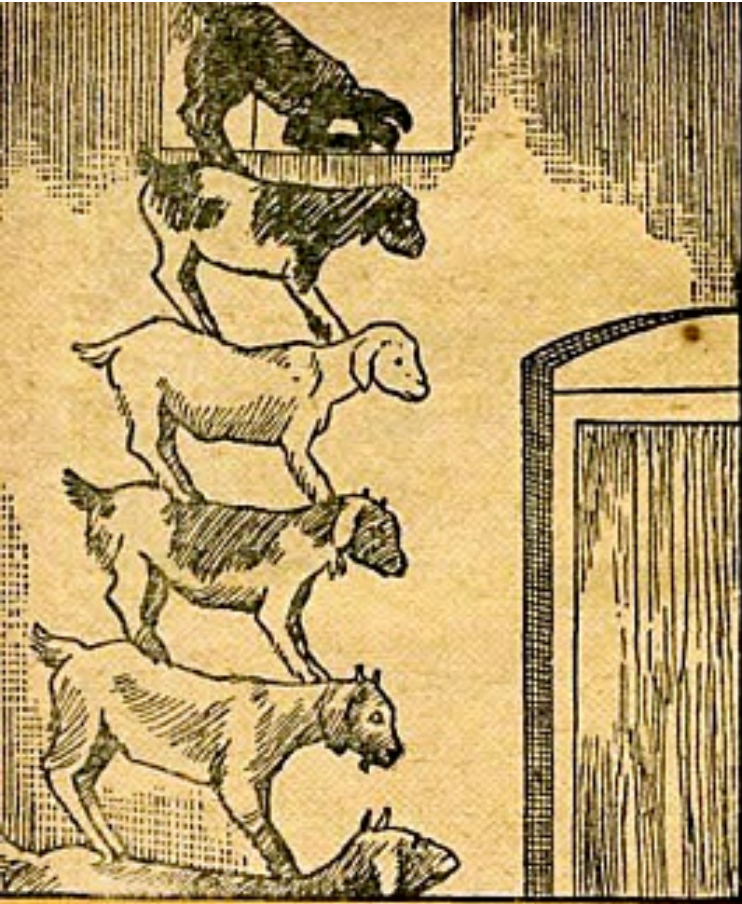
'बचो! खोलो झट दरवाजा! मैं लाई हू लड्डू, खाजा!' तुरन्त मिठाई की लालच से बकरी के पाँचों बचों ने दौड़ कर दरवाजा खोलना चाहा। लेकिन सबसे छोटे बचे ने उन्हें रोक कर कहा—'जरा गौर करो! इसका गला भर्राया हुआ सा मालूम होता है। यह तो भेड़िया है!' तब बाकी बचों ने भेड़िए की चाल जान ली और कहा—'दुष्ट भेड़िए! जा! तू जा! नहीं खुलेगा दरवाजा!' तब भेड़िए ने समझ लिया कि बकरी के बचों को उसके भर्राए हुए गले की बात मालूम हो गई है। इसलिए उसने बनिए के पास जाकर थोड़ी काली मिर्च ले ली; ग्वाले के पास जाकर थोड़ा सा दूध माँग लिया। फिर दूध में काली मिर्च की बुकनी मिला कर पी गई। तब उसके गले की भर्राहट दूर हो गई। उसने फिर बकरी के घर के पास जाकर कहा—'बचो! खोलो झट दरवाजा! मैं लाई हूँ लड्डू खाजा!' अब उसका गला मीठा था। इसलिए बकरी के पाँच बचों ने इस बार पूरा विश्वास कर लिया कि उनकी माँ ही दरवाजा खोलने को कह रही है। वे झट दौड़ पड़े। लेकिन फिर छोटे बच्चे ने उन्हें रोक कर कहा—'ठहरो! हो सकता है कि यह भेड़िए की ही कोई नई चाल हो। इसलिए देख लेना चाहिए कि उसके पाँव उजले हैं कि नहीं!' तब बकरी के बच्चे एक दूसरे की पीठ पर इस तरह खड़े हो गए कि सबसे छोटा बचा खिड़की की सतह तक पहुँचा। उसने बाहर झाँक कर देखा तो भेड़िए के पाँव कोयले से काले थे। उसने कहा—'अरे, इसके पाँव तो उजले नहीं हैं! यह तो भेड़िया है।' तब सब ने फिर भेड़िए का भेद जान लिया और दरवाजा नहीं खोला। तब भेड़िया मन ही मन खूब बिगड़ता हुआ गाँव में एक बुढ़िया के पास गया और थोड़ा सा आटा माँग लिया। उसने आटा अपने पैरों

में चिपटा लिया। उसने सोचा कि इस बार बकरी के बच्चे उसे पहचान न पाएँगे। हुआ भी ऐसा ही। इस बार खिडकी से झाँकने पर छोटे बच्चे ने देखा कि पाँव भी उजले हैं। उसने कहा—'यह जरूर हमारी माँ है।'

तब बच्चों ने मिठाई की लालच से तुरंत दौड़ कर दरवाजा खोल दिया। अब क्या था? भेड़िया अन्दर झपटा। उसे देखते ही बच्चे सभी कोने में दुबक गए। लेकिन भेड़िए ने खोज ढूँढ़ कर एक एक को निगल लिया। लेकिन सबसे छोटा बचा पलंग के नीचे जाकर छिप गया था। इसलिए भेड़िया उसे नहीं निगल सका। पाँच बचों को निगलने के कारण भेड़िए का पेट फूल गया। वह ज्यादा दूर न चल सका और नजदीक ही एक पेड़ की छाँह में जाकर लेट गया।

थोड़ी देर बाद बकरी ने घर आकर देखा तो सारा घर सूना पड़ा था। उसने जोर से पुकारा। तब कहीं छोटा बचा पलंग के नीचे से बाहर आया। उसने अपनी माँ को सारी कहानी कह सुनाई। तब दोनों भेड़िए को ढूँढ़ने चले। थोड़ी ही दूर पर उन्हें भेड़िया पेड़ की छाँह में आराम से खुर्राटे लेता दिखाई दिया। तुरंत बकरी गाँव में जाकर एक जान-पहचान के दर्जी को बुला लाई। दर्जी ने एक बड़ी कैंची से भेड़िए का पेट कतर डाला। तुरंत बकरी के पाँचों बचे एक एक करके उछलते हुए बाहर आ गए। तब दर्जी ने बहुत से कंकड़-पत्थर चुन कर भेड़िए के पेट में ठूँस दिए और उसे पहले की तरह सी दिया।
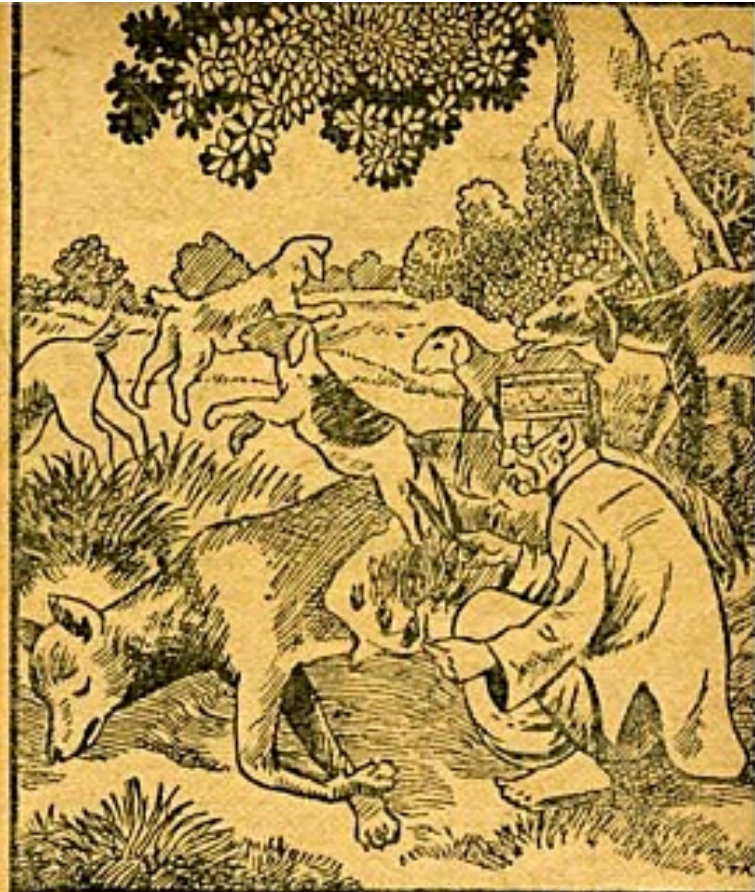
थोड़ी देर बाद जब भेड़िए की नींद टूट गई तो उसे बड़े जोर की प्यास लगी। वह पानी पीने के लिए एक नदी के किनारे गया। लेकिन पेट में पत्थर भरे होने के कारण वह आगे को झुक गया और नदी में गिर कर डूब गया।

एक समय विदर्भ देश पर शूरसिंह नाम का एक राजा राज करता था। उसके एक लड़की थी जिसका नाम कनक-प्रभा था। जब वह सयानी हो गई तो राजा ने उसका ब्याह कर देना चाहा। लेकिन उसने कहा—'जो हेम-द्वीप जाकर वहाँ की खबरें मुझे लाकर सुनाएगा मैं उसी से ब्याह करूँगी। यह मेरा प्रण है।'

उसका यह प्रण सुन कर माँ-बाप को बहुत अचरज हुआ। लेकिन वे इस जिद्दी लड़की के बारे में कुछ नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने उसके प्रण का ढिंढ़ोरा सभी देशों में पिटवा दिया।

अब इस हेम-द्वीप का मार्ग बहुत कम लोग जानते थे। वहाँ जाकर सही-सलामत लौट आना तो लगभग नामुमकिन ही था। इसलिए बहुत दिनों तक उस राजकुमारी से कोई ब्याह करने नहीं आया। लेकिन कुछ दिन बाद विष्णु-वर्धन नामक एक राजकुमार ने राजा के पास आकर कहा—'मैं देश-विदेश घूम कर आ रहा हूँ। मैंने हेम-द्वीप भी देखा है।' तब राजा ने राजकुमारी से उसकी मुलाकात करा दी। राजकुमारी ने उससे हेम-द्वीप के बारे में कुछ सवाल पूछे। लेकिन वह राजकुमार उन सवालों का जवाब नहीं दे सका। उसने लाज से सिर नीचे झुका लिया। क्योंकि वास्तव में उसने हेम-द्वीप नहीं देखा था। तब राजा ने क्रोधित होकर उसे अपने दरबार से निकलवा दिया। इस तरह अपमानित होकर राजकुमार ने मन में निश्चय कर लिया कि चाहे जैसे भी हो, हेम-द्वीप की यात्रा करनी ही चाहिए। इसलिए वह अनेकों घने जंगल पार कर समुन्दर के किनारे पहुँचा और वहाँ एक जहाज पर चढ़ कर रवाना हुआ। लेकिन न जाने, वह किस दुर्मुहूर्त्त में चला था कि राह में ही एक

गिरिधर लाल

बड़ा भारी तूफान उठा और जहाज डूब गया। जहाज में जो लोग थे, उनमें से कोई न बचा। विष्णु-वर्धन को एक बड़ी मछली ने निगल लिया।

वह मछली रत्न-द्वीप की ओर जाकर वहाँ धीवरों के जाल में फँस गई। उस मछली को धीवरों ने ले जाकर उस देश के राजा सत्यव्रत की भेंट की। राजा ने उस मछली को जब चिरवाया तो उसके पेट में से विष्णु-वर्धन बाहर निकल आया। राजा ने दाँतों तले उँगली दबाते हुए उससे पूछा—'तुम कौन हो और कहाँ के रहने वाले हो?' तब उसने अपनी सारी कहानी कह सुनाई और अन्त में राजा से प्रार्थना की—'राजन्! मुझे हेम-द्वीप की राह बता दें।' तब राजा सत्यव्रत ने कहा—'मैंने उस टापू का नाम तो सुना है। लेकिन उसकी राह नहीं जानता। फिर भी तुम एक काम करो! परसों मैं राहु-द्वीप जाने वाला हूँ। वहाँ बहुत से ऐसे महात्मा लोग हैं जो संसार भर घूम आए हैं। वे आसानी से तुम्हारी मदद कर सकते हैं। तुम परसों तक यहीं रह कर मेरे साथ राहु-द्वीप चलो।' तीसरे दिन विष्णु-वर्धन भी उस राजा के साथ राहु-द्वीप की ओर चला। लेकिन बीच समुन्दर में जाते ही फिर एक तूफान उठा और जहाज एक भँवर में फँस कर टुकड़े टुकड़े होकर डूब गया। जहाज का एक तख्ता विष्णु-वर्धन के हाथ लग गया जिसकी सहायता से वह किनारे पहुँचा। लेकिन सत्यव्रत उसी भँवर में डूब गया।
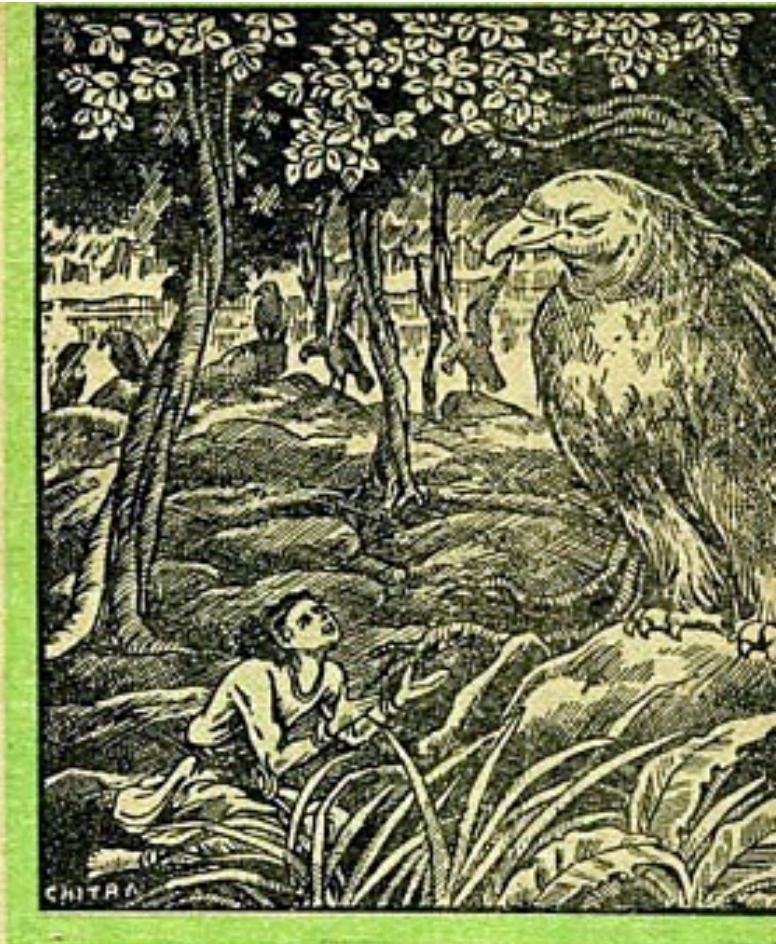
अब राजकुमार विष्णु-वर्धन बहुत ही दुखी होकर किनारे पर एक पेड़ की छाँह में बैठ गया। इतने में बहुत बड़े पंछियों का एक झुण्ड आकर उसी पेड़ के इर्द-गिर्द उतरा। राजकुमार को चिड़ियों की भाषा मालूम थी। इसलिए उन पंछियों की

बातचीत से उसे मालूम हो गया कि वे हेम-द्वीप की ओर ही जा रहे हैं। तुरन्त उसने एक बड़े पंछी से विनती की—'मुझे भी अपने साथ हेम-द्वीप ले चलो।' तब उस पंछी ने उस पर तरस खाकर उसे अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और हेम-द्वीप के एक बगीचे में उसे ले जाकर उतार दिया।

वह बगीचा उस द्वीप की रानी का था। थोड़ी देर में दासियों ने उसे देख लिया और अपनी रानी के सामने ले जाकर खड़ा किया। उस रानी का नाम कनक-रेखा था। उसने बहुत चकित होकर उससे पूछा—'तुम कौन हो और इस दुर्गम द्वीप पर कैसे आ पहुँचे हो?' तब विष्णु-वर्धन ने अपनी सारी कहानी सुनाई। उसकी बातें सुन कर रानी कनक-रेखा ने भी अपना सारा हाल उसे सुना दिया। उसने कहा—'हम तीन बहनें थीं। एक दिन मेरी दोनों बहनें एक सरोवर में किलोलें कर रहीं थीं कि उनकी छिटकाई पानी की बूँदें किनारे पर बैठ कर तप करने वाले एक महात्मा पर पड़ीं। तुरन्त उन्होंने गुस्सा होकर शाप दिया कि तुम दोनों पृथ्वी पर जाकर मनुष्य-रूप में जन्म लो। उस शाप के कारण मेरी दोनों बहनें मुझसे बिछुड़ गईं। वे पृथ्वी पर जाकर पैदा हुईं और मैं अकेली यहाँ रह गई।'

विष्णु-वर्धन वहाँ रहते रहते रानी से प्रेम करने लगा। रानी ने भी उससे ब्याह करना मंजूर कर लिया। लेकिन उसने कहा—'इसके लिए मुझे अपने पिता से पूछना होगा। मैं तीन दिन में उनके पास जाकर लौट आऊँगी। तब तक तुम मेरे इस महल में आराम से रहो। लेकिन एक बात याद रखना—बीच वाला कमरा कभी न खोलना।' यह कह कर रानी कनक-रेखा वहाँ से चली गई।

विष्णु-वर्धन दो दिन तक उस महल में अकेला घूमता रहा। लेकिन तीसरे दिन उसके मन में कुतूहल का एक झोंका उठा और वह बीच वाला कमरा खोल कर अन्दर चला गया। वहाँ एक सफेद पलंग पर एक सुन्दरी सोई हुई थी। राजकुमार ने और भी नजदीक जाकर देखा तो मालूम हुआ कि यह वही सुन्दरी कनक-प्रभा थी जिसके कारण वह इतने कष्ट उठा कर हेम-द्वीप आया था। अचरज से भर कर उसने चारों तरफ देखा तो उसे और एक पलंग पर ठीक उसी शक्ल की एक दूसरी सुन्दरी दीख पड़ी। राजकुमार का अचरज और भी बढ़ गया और वह वहाँ के बगीचे में घूमने लगा।

उस बगीचे के बीचों-बीच एक सुन्दर सरोवर था। उस सरोवर के किनारे पर एक बढ़िया घोड़ा कसा हुआ खड़ा था। राजकुमार उसके पास पहुँचा और उस पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन उस घोड़े ने ऐसा पुट्ठा उछाला कि राजकुमार धड़ाम से सरोवर में जा गिरा।

पानी के तले में जाकर राजकुमार फिर ऊपर आया। ऊपर आकर उसने देखा कि न वह सरोवर है, न महल। बगीचे का कहीं नामो-निशान भी न था। वह विदर्भ देश की मिट्टी पर खड़ा था। उसे ऐसा लगा कि जो कुछ उसने देखा-सुना सब सपना था। लेकिन जब उसने अपनी ओर देखा तो उसे मालूम हुआ कि वह हेम-द्वीप की रानी के दिए हुए जड़ाऊँ जेवर और कपड़े पहने है। फिर वह कैसे मान ले कि सब कुछ सपना था?

दूसरे दिन राजकुमार विष्णु-वर्धन ने विदर्भ देश के राजा के पास जाकर कहा—'मैं हेम-द्वीप हो आया हूँ और आपकी पुत्री के प्रश्नों का उत्तर देने आया हूँ।' लेकिन

राजा ने कहा—'अच्छी तरह सोच-विचार लो! अगर इस बार भी पहले की तरह तुम्हारी बातें झूठी साबित हुईं तो फिर जान की खैर नहीं! समझे?' लेकिन राजकुमार को इस बार डरने की कोई जरूरत न थी।

जब राजकुमार ने कनक-प्रभा से हेम-द्वीप का आँखों देखा वर्णन कह सुनाया तो उसने प्रसन्न होकर कहा—'हे राजकुमार! तुम्हारी जबानी अपने पूर्व-जन्म का हाल सुनते ही मेरा शाप छूट गया। इसलिए अब मैं अपने हेम-द्वीप को लौट जाती हूँ। अगर तुम मुझसे ब्याह करना चाहते हो तो हेम-द्वीप आओ!' यह कह कर वह सबकी आँखों से ओझल हो गई। यह देख कर बेचारे राजा-रानी मूर्छित हो गए।

राजकुमार विष्णु-वर्धन वहाँ से चलता चलता कुछ दिनों में रत्न-द्वीप जा पहुँचा। वहाँ सत्यव्रत की पुत्री राजकुमारी कनक-वती ने उससे कहा—'हे राजकुमार! मेरे स्वर्गीय पिताजी की यह इच्छा थी कि मैं तुमसे विवाह करूँ। इसलिए मैं इतने दिन से तुम्हारी राह देख रही थी। आगे तुम्हारी जो इच्छा!' तब राजकुमार ने उससे विवाह कर लिया। विवाह होते ही कनक-वती ने कहा—'तुमसे ब्याह होते ही मेरा शाप भी छूट गया। मैं हेम-द्वीप की रानी कनक-रेखा की दूसरी बहन हूँ। चलो, अब हम भी हेम-द्वीप चलें।' तब वे दोनों एक विमान पर चढ़ कर हेम-द्वीप की ओर उड़ चले। वहाँ जाकर विष्णु-वर्धन ने अपनी प्रतीक्षा में बैठी हुई कनक-रेखा और कनक-प्रभा से भी ब्याह कर लिया। इस प्रकार अपनी तीनों रानियों के साथ वह सुख-पूर्वक समय बिताने लगा।

सीतापुर में एक नाटे पण्डितजी रहा करते थे। उनकी पत्नी का नाम था सुखवन्ती। सुखवन्ती बहुत ज्यादा लम्बी-तगड़ी तो न थी। लेकिन उसका पति बहुत नाटा होने के कारण उसके कन्धे तक भी न पहुँचता था। वह बेचारी सर और कमर झुका कर बुढ़िया की तरह खड़ी हो जाती तो भी कुछ फायदा न होता था। इसलिए वह बहुत सोच में पड़ गई। क्योंकि उसकी समझ में पति से ज्यादा लम्बी होना पतिव्रता का लक्षण न था।

पड़ोस की रामप्यारी देवी बार-बार उसे समझाती—'पति से ज्यादा लम्बी होने में तुम्हारा कोई दोष नहीं। वह तो नाटा पैदा हुआ। इसमें उसका भी दोष न था। अब चिंता करके तुम क्या कर सकती हो?' लेकिन सुखवन्ती का तो मन नहीं मानता। वह कहती—'रामप्यारी जी! अगर आप ही ऐसा कहने लगीं तो मैं क्या करूँ! आप ही ने तो आदर्श रमणियों की कहानियाँ मुझे पढ़ कर सुनाई थीं? क्या गाँधारी ने अपने पति को अन्धा देख कर अपनी आँखों पर भी पट्टी नहीं बाँध ली थी? क्या गाँधारी हमारे लिए आदर्श नहीं है?'

'लेकिन गाँधारी की नकल करना क्या हमारे लिए मुमकिन है?' रामप्यारी जवाब देतीं।

इस उत्तर से सुखवन्ती को सन्तोष न होता। वह कहती—'परसों आपने ही तो एक कहानी सुना कर समझाया था कि पतिव्रता स्त्रियों के लिए संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है। क्या सावित्री ने अपने मृत पति को यम के हाथ से छुड़ा नहीं लिया था?'

तब रामप्यारी ने कहा—'हम उनकी नकल नहीं कर सकतीं। लेकिन अभी एक बात सूझी है मुझे। परसों मेरा बड़ा लड़का धनुआ कहीं से लोहे के दो कड़े लाया और छत से लटकने लगा। मैंने पूछा— यह क्या कर रहे हो? तब उसने जवाब दिया—

वीणा देवी

भी रख दी। शाम को नाटे पण्डित घर आए और यह तमाशा देखा तो क्रोध से भर कर बोले—'यह सब क्या है ? किसी को फांसी देना चाहती हो क्या ?' लेकिन उस भोली-भाली पतिव्रता को यह मालूम न था कि फाँसी किस चिड़िया का नाम है। वह नहीं जानती थी कि फाँसी के लिए रस्सों की जरूरत पडती है। इसलिए उसने झट कह दिया—'यह सब आप ही के लिए है।'

यह जवाब सुन कर नाटे पण्डित आग-बबूला हो गए और लगे अन्धा-धुन्ध छड़ी बरसाने। रोते रोते बेचारी अपने मन की बात उन्हें समझाने की कोशिश करने लगी। लेकिन नाटे पण्डित ने उसकी एक न सुनी। सुखवन्ती बेचारी की समझ में न आया कि उसके किस कसूर के कारण आज उसके पतिदेव इतने नाराज हो गए हैं ?

नाटे पण्डित चुपचाप कमरे में जाकर मुँह फेर कर लेट रहे। बेचारी सुखवन्ती रामप्यारी जी के घर गई। वह अपने पतिदेव से बातें कर रहीं थीं। 'अजी ! क्या कलियुग में भी पहले की सी पतिव्रताएँ कहीं हैं ?' रामप्यारी जी ने अपने पतिदेव से पूछा।

'अरे भई ! कुछ न पूछो ! कलियुग में वैसी औरतें कहाँ हैं ! आजकल पतिदेव दिन

'इन कड़ों को पकड़ कर लटकूँगा तो मैं और भी लम्बा हो जाऊँगा।'

इस तरह थोड़ी देर तक बातें करने के बाद रामप्यारी अपने घर चली गईं। लेकिन सुखवन्ती के मन में कड़े की बात बैठ गई। वह भी अपने पति को लम्बा बनाने के लिए कड़े की तलाश में लग गई। लेकिन बहुत खोजने पर भी उसे अपने घर में वैसे कड़े न दिखाई दिए। तब उसने दो मोटे रस्से लेकर छत से लटका दिए। उसने सोचा—रोज उन्हें पकड़ कर थोड़ी देर लटकने से नाटे पण्डित जरूर लम्बे हो जाएँगे। उन्हें रस्से पकड़ने में सुविधा हो, इसलिए उसने एक टेबुल वहाँ रख कर उस पर एक चौकी

भर मेहनत करके घूम-फिर कर थके-मोंदे शाम को घर आते हैं; लेकिन पत्नीजी को यह नहीं सूझती कि जरा उनके पैर दबा दे!' उन्होने कहा।

'वाह! वाह! कैसा सफेद झूठ बोल गए! क्या मैं रोज आपके पाँव नहीं पलोटती हूँ!' रामप्यारी ने पूछा।

'अरे भई! मैं तुम्हारी बात नहीं कर रहा हूँ। तुम जैसी पतिव्रता तो आजकल इनी-गिनी हैं। भला अगर तुम रोज मेरा पाँव न दबातीं तो बताओ, मैं इतना लम्बा कैसे बन जाता!' रामप्यारी के पतिदेव ने मजाक के तौर पर कहा। यह सुनते ही सुखवन्ती ने उनसे पूछा—'तो क्या आप व्याह के पहले नाटे थे!'

'हाँ, बहन! मैं अपने व्याह के पहले तुम्हारे पति से भी नाटा था। अब देखो न, तुम्हारी भावज ने मुझे कितना लम्बा बना दिया है!' उन्होंने जवाब दिया।

भोली-भाली सुखवन्ती ने यह सब सच मान लिया। उसने नहीं सोचा कि ये मजाक में ऐसा कह रहे हैं। वह वहाँ से उठ कर घर गई तो देखा कि पतिदेव पलंग पर खुर्राटे ले रहे हैं। उसने सोचा कि पाँव दबा कर वह भी अपने पतिदेव को लंबा बना सकती है। वह धीरे से जाकर पलंग पर पैताने बैठ गई।

रामप्यारी और उसके पति कुछ देर तक गपशप करके सोने के लिए जाने लगे तो उन्हें नाटे पण्डित के घर से जोर की चीख-पुकार सुनाई दी। वे चौंक कर दौड़े दौड़े बाहर आए। रामप्यारी के पति ने साहस करके नाटे पण्डित को पुकार कर कहा—'यह आज कैसी सूझी! क्यों उस बेचारी को पीट रहे हो!'

तब नाटे पण्डित ने कहा—'यह मेरी स्त्री काहे की! यह तो चुड़ैल है, चुड़ैल! जरा मेरी आँख लग गई थी कि झट लगी मेरा गला घोंटने!'

रामप्यारी को यह सुन कर बड़ा अचरज हुआ और उसने सुखवन्ती से पूछा—'सच बताओ, क्या मामला है?'

तब उसने रोते हुए कहा—'मैं पतिव्रता हूँ। मैं क्यों अपने पति को मारने चलूँगी! जरा सा गला दबाने लगी; इसी के लिए इन्होंने इतना हो-हल्ला मचा दिया।'

'यह गला दबाना क्या बला है!' रामप्यारी ने पूछा।

'क्या आपने अपने पति के पाँव दबा कर उन्हें लंबा नहीं बना दिया! उसी तरह मैं भी उनके पाँव दबाने चली....' सुखवन्ती यह कह रही थी कि रामप्यारी के पति ने बीच में टोक कर पूछा—'पाँव दबाने वाली फिर गला कैसे दबाने लगीं!'

'पहले तो पाँव ही दबाना चाहती थी। लेकिन इतने में उनके गले पर मेरी नजर पड़ गई। मैंने सोचा, पैरों से गला ज्यादा मुलायम होता है। इसलिए गला जल्दी लंबा हो सकता है। इसके अलावा गला पवित्र भी होता है। एक पतिव्रता के लिए पतिदेव के पाँव दबाने की अपेक्षा गला दबाना ही उचित है।' सुखवन्ती ने बड़ी गंभीरता से कहा।

तब रामप्यारी के पति को मालूम हो गया कि इस बेचारी ने उसकी मजाक की बातों पर पूरी तरह विश्वास कर लिया। उसके भोलेपन पर हँसी भी आई और तरस भी। नाटे पण्डित को अब सब कुछ समझ में आ गया। उसने कहा—'तो बात यह है! कैसी बेवकूफ है यह! और शाम को रस्से वगैरह देख कर मैंने समझा कि यह मुझे फाँसी देने चली है।' उसने साँझ का किस्सा कह सुनाया। अब रामप्यारी बहुत अफसोस करने लगी कि उसके उपदेशों का यह फल हुआ। उन्होंने बहुत कोशिश करके नाटे पण्डित को समझा दिया कि उनकी स्त्री की नीयत बहुत अच्छी थी। उसके भोलेपन के कारण ही ऐसा हुआ। इसमें उसका कोई दोष नहीं।

लोग कहते हैं कि एक देश में एक गरीब आदमी रहता था। उसके तीन बेटे थे। एक रात तीनों लड़कों ने एक साथ विचित्र सपने देखे। सबेरे उठ कर जब उन्होंने यह बात अपने पिता से कही तो उसने कहा—'बच्चो! सपनों की बात मुझे ठीक-ठीक बता दो जिससे मैं उनका फल सोचूँ!'

यह सुन कर बड़े और मँझले ने अपने अपने सपने कह सुनाए।

'ठीक है; ये सपने बुरे नहीं हैं। इनका फल अच्छा ही होगा।' पिता ने खुश होकर कहा।

लेकिन छोटे लड़के सुशील ने अपने सपने का हाल बताने से इनकार कर दिया। उसने कहा—'मैं अपने सपने का हाल किसी को नहीं बता सकता।'

पिता ने उसे बहुत समझाया; आखिर डराया-धमकाया भी। लेकिन वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। तब गुस्से में आकर उसके पिता ने एक छड़ी हाथ में ले ली और उसे पीटना शुरू किया। अब सुशील जोर-जोर से चिल्लाने लगा। रोते-रोते उसने सारा घर अपने सिर पर उठा लिया।

संयोग से उसी वक्त उस शहर का राजा उस राह से गुज़र रहा था। सुशील की चिल्लाहट सुन कर वह अन्दर आया और उसके पिता से बोला—'अजी! तुम पागल हो क्या? बेचारे लड़के को क्यों इस तरह पीट रहे हो?'

सुशील के पिता ने शान्त होकर सारा किस्सा कह सुनाया। तब राजा ने कहा—'अच्छा, लड़के को मेरे साथ भेज दो। मैं

मोहिनी बाई

लाड़-दुलार करके किसी न किसी तरह उसके सपने का हाल जान लूँगा।' यह कह कर उसने गरीब पिता को अशर्फियों की एक थैली दी और सुशील को घोड़े पर चढ़ा कर अपने साथ ले गया।

किले में जाकर राजा ने सुशील को बहुत प्यार से मीठी बातों में फुसला कर उसके सपने का समाचार जानना चाहा। लेकिन सुशील ने नाक पर मक्खी तक न बैठने दी। आखिर राजा ने बिगड़ कर सिपाहियों को बुलाया और कहा—'यह बेवकूफ नहीं जानता कि राजा का हुक्म टालने का क्या नतीजा होता है! मैं इसे एक अच्छा पाठ पढ़ाना चाहता हूँ। जाओ, इसे ले जाकर जिन्दा ही दीवार में चुन दो!' तुरंत सिपाही उसे बाँध ले गए।

लेकिन राजा की इकलौती बेटी ने सुशील को देख लिया था। वह समझ गई थी कि यह कोई मामूली लड़का नहीं है। आगे चल कर यह जरूर प्रतापी होगा। राजा ने गुस्से में आकर उसे बेवकूफ समझ लिया और मरवा डालने का हुक्म दिया। लेकिन राजकुमारी ने निश्चय कर लिया कि वह बेवकूफ नहीं है। सपने को सबसे छिपाने का जरूर कोई न कोई कारण होगा। इसलिए उसने उसे मौत के मुँह से बचाने का संकल्प किया। उसने चुपचाप राजगीरों को बुलवाया और उन्हें हुक्म दिया कि दीवार खोखली बनाओ और उसमें एक चोर-दरवाजा भी छोड़ो।

राजगीरों ने राजकुमारी की आज्ञा का पालन किया। इसलिए दीवार में चुन दिए जाने पर भी सुशील पर कोई खतरा न आया। राजकुमारी ने सबकी आँख बचा कर उससे मुलाकात की और उसके खाने-पीने

का इन्तजाम भी कर दिया। इस तरह सुशील उस दीवार में मौज से रहने लगा।

कुछ दिन बाद पड़ोस के एक राजा ने एक भारी फौज के साथ उस शहर पर चढ़ाई कर दी और राजा के पास खबर भेजी—'मैं तुम से कुछ सवाल करूँगा। या तो तुम उनका ठीक ठीक जवाब दो या अपनी हार कबूल कर लो!'

तब राजा ने सवालों का जवाब देना मंजूर किया और पूछा—'अच्छा! बोलो! तुम्हारा पहला सवाल क्या है?'

तब पड़ोसी राजा ने उसे अपने अस्तबल में ले जाकर पाँच घोड़े दिखाए और पूछा—'बताओ, पाँचों में उम्र में कौन बड़ा है?'

तब राजा ने उससे कुछ मोहलत माँगी और घर जाकर सोचने लगा।

राजकुमारी को भी यह सारा मामला मालूम हो गया। उस दिन उसने सुशील के पास जाकर उस सवाल का जवाब पूछा। तब सुशील ने कहा—'इसके लिए इतना सोचने की जरूरत क्या है? इसका जवाब तो बहुत आसान है। देखो—पाँच बाल्टियों में पाँच साल की फसल का अनाज

रखवा दो। यह याद रख लो कि किस बाल्टी में किस साल की फसल का अनाज है। तब घोड़ों को बाल्टियों के पास छोड़ दो। सबसे बड़ा घोड़ा सबसे पहले साल की फसल का दाना खाने जाएगा। सबसे छोटा घोड़ा पाँचवें साल का दाना खाने आएगा। इस तरह तुम जान जाओगी कि किस घोड़े से कौन बड़ा है!'

तब राजकुमारी ने यह उपाय अपने पिता को जाकर बता दिया। यह सुनते ही राजा खुशी से उछल पड़ा और उसका सारा सोच दूर हो गया। दूसरे दिन वह गर्व से सर उठाए पड़ोसी राजा के पास गया और उसके

फिर भी उसके बीचों-बीच एक रस्सी बाँध कर उसे लटकाया जाए तो एक छोर जरूर नीचे झुक जाएगा। वही जड़ वाला छोर है।'

तुरंत राजकुमारी ने घर जाकर अपने पिता से यह कह दिया। दूसरे दिन राजा ने पड़ोसी राजा के पास जाकर उसके दूसरे सवाल का जवाब भी दे दिया। इस पर पड़ोस के राजा ने कहा—'मेरा और एक सवाल है। अगर उसका भी जवाब दोगे तो मैं घर लौट जाऊँगा।' यह कह कर उसने मन्त्र पढ़ कर एक तीर किले की दीवार पर निशाना लगा कर मारा। तुरंत भयंकर शब्द के साथ किले की दीवार एक बार बुनियाद से हिल उठी। तीर दीवार में घुस गया। तब पड़ोसी राजा ने कहा—'तीर को बाहर निकाल लाओ। नहीं तो मैं समझ लूँगा कि तुम हार गए।'

अब उस शहर के राजा ने सोचा कि इस बार जरूर उसका काम तमाम हो हो जाएगा। उसने घबरा कर तुरंत राज्य-भर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो उस तीर को दीवार से बाहर निकालेगा उसे मैं आधा राज देकर अपनी बेटी के साथ उसका ब्याह

सवाल का जवाब दे दिया। जवाब ठीक था। इसलिए पड़ोसी राजा उसका कुछ न बिगाड़ सका। लेकिन उसका इरादा था इस का राज छीनना। इसलिए उसने दूसरा सवाल किया—'मेरे पास एक लकड़ी का तना है। तुम्हें बतलाना होगा कि उसकी जड़ किधर है और सिरा किधर!' यह कह कर उसने वह लकड़ी का तना दिखला दिया जिसके दोनों छोर एक ही से लगते थे। राजा उदास मन से फिर घर लौट आया।

तब राजकुमारी फिर उस शाम को सुशील के पास गई। तब सुशील ने बतलाया—'तना देखने में दोनों ओर से एक सा लगता है।

भी कर दूँगा। यह सुन कर बहुत लोग अपना भाग्य आजमाने आए। लेकिन सब निराश होकर लौट गए। वह तीर जादू के बल से दीवार में चिपक गया था। यह देख कर राजा फिर निराश हो गया।

शाम होते ही राजकुमारी फिर सुशील के पास पहुँची और सारी कहानी कह सुनाई। सुशील ने धीरज देकर उसके कान में कुछ कह दिया। दूसरे दिन सवेरा होते ही राजकुमारी पिता के पास गई और बोली—'पिताजी! रात को मैंने एक सपना देखा है। उस सपने में एक देवी ने मुझसे कहा कि तुमने सुशील को जिस दीवार में चुनवा दिया था, उसमें एक वीर पुरुष रहता है। वही उस तीर को दीवार से निकाल सकता है।'

राजा तो सुशील की बात भूल ही गया था। उसने सिपाहियों से कहा—'उस दीवार को ढाह दो।' दीवार गिराते ही उसमें से सचमुच ही एक वीर पुरुष निकला। वह सीधे किले की दीवार के पास पहुँचा और एक मन्त्र पढ़ कर बड़ी आसानी से तीर निकाल लिया। दूसरे दिन पड़ोस के राजा को

जब यह मालूम हुआ तो वह अपना सा मुँह लेकर लौट गया। लेकिन उसने जान लिया कि दुश्मन के दरबार में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी बुद्धि-कुशलता और वीरता के कारण उसकी कोई चाल चलने न पाई। इसलिए उसने राजा के पास खबर भेजी—'हमने सुना है कि आपके दरबार में कोई वीर पुरुष है। हम उसे देखना चाहते हैं। इसलिए आप उसे एक बार हमारे दरबार में भेजिए।'

राजा ने मंजूर कर लिया। लेकिन सुशील ने मन ही मन सोचा कि यह भी जरूर पड़ोसी राजा की कोई चाल है। इसलिए उसने

कुछ बहादुरों को अपनी ही जैसी पोशाक पहना दी और उन्हें भी अपने साथ ले लिया। जब वह उन सबको साथ लेकर पड़ोसी राजा के दरबार में गया तो उसके लिए उसे पहचानना मुश्किल हो गया। उसने सुशील को पहचानने की बहुत कोशिश की। पर उसकी सारी कोशिश बेकार गई। आखिर उसने बहुत प्रेम से कहा—'तुम लोगों में कौन वह वीर है जिसकी वीरता की बहुत सी बातें मैंने सुनी हैं? मैं उस वीर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आगे आए और मेरे हाथों पुरस्कार ले जाए!' यह सुनते ही सुशील उठा और राजा के आगे खड़ा हो गया। राजा की नीयत तो बुरी थी ही। उसने झट सिपाहियों से उसे पकड़ने का हुक्म दिया। लेकिन इसके पहले ही बीसों जवानों ने अपनी तलवारें निकाल ली थीं। सुशील ने भी अपनी तलवार निकाल कर राजा पर ऐसा वार किया कि तुरन्त उसका सर धड़ से जुदा होकर नीचे गिर पड़ा। सुशील ने उसे अपनी तलवार की नोक पर चुभा लिया और अपने वीर साथियों के साथ लड़ता-भिड़ता वहाँ से निकल भागा। दरबारियों को भी अपने राजा से ज्यादा प्रेम न था। इसलिए उन्होंने हार मान ली।

दूसरे दिन सुशील ने राजा को उसके दुश्मन की मौत का हाल बताया और सिर भी दिखा दिया। तब राजा ने उसकी चतुरता और वीरता की बहुत प्रशंसा की। इस पर राजकुमारी ने सुशील का सच्चा हाल पिता को सुना दिया। राजा बहुत चकित हो गया। उसने अपने वचन के अनुसार उसे अपना आधा राज दे दिया और अपनी बेटी से उसका ब्याह कर दिया। सुशील राजकुमारी के साथ सुख से दिन बिताने लगा।

पुराने जमाने में सुधाम और चित्रकेतु नामक दो भाई रहते थे। एक बार वे यात्रा करने निकले। थोड़ी दूर जाने के बाद उन्हें एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ दिखाई दिया। वहाँ से रास्ता दो तरफ जाता था। दोनों ने अलग हो जाने का निश्चय कर लिया। चलते समय उन्होंने यह भी तय कर लिया कि लौट कर वे इसी बरगद के नीचे फिर मिलेंगे।

सुधाम के साथ दो कुत्ते भी थे। कई घने जंगल पार कर वह एक ऊँचे पहाड़ के पास पहुँचा। उस पहाड़ पर चढ़ने पर उसे कई मट्टी की हाँड़ियाँ औंधी दिखाई दीं। उसने एक हाँड़ी उठा कर देखी। लेकिन उसके नीचे कुछ नहीं था। उसने उसको फिर उसी तरह औंध देना चाहा। लेकिन औंधने के पहले ही वह फूट गई। इस तरह उसने कई हाँड़ियाँ उठाईं और औंधते समय सब की सब फूटती गईं। सुधाम ने सबसे आखिरी हाँड़ी उठाई। उसमें से एक अजीब आदमी उठ खड़ा हुआ। उसका सारा शरीर देखने में आदमी सा लगता था। पर दाहिना पाँव पेड़ के तने जैसा था। उस आदमी ने सुधाम को देख कर क्रोध से कहा—'अरे दुष्ट! ये हाँड़ियाँ मैंने बहुत मेहनत करके बनाई थीं। लेकिन तू ने एक-एक करके सबको फोड़ दिया। इन हाँड़ियों को बनाने के काम आने वाली मट्टी यहाँ से दस कोस की दूरी पर 'नील-सरोवर' के सिवा और कहीं नहीं मिलती। इसलिए तू अभी मुझे अपने कंधों पर चढ़ा कर वहाँ तक ले चल! यही तेरी सजा है!' वह आदमी गरजा।

नरेन्द्र शर्मा

सुधाम जरा भी न डरा। लेकिन उसने सोचा—'इस विचित्र मनुष्य के पैर में कुछ न कुछ रहस्य जरूर छिपा हुआ है। इसलिए इससे झगड़ा करना ठीक नहीं।' यह सोच कर बड़े नम्र स्वर में उसने कहा—'भाई! ऐसी हाँड़ियाँ तो मैंने अपने देश में कभी नहीं देखीं थीं। इसलिए उठा-उठा कर देख रहा था। कसूर मेरा है। हुक्म दो, मैं जाकर नील-सरोवर से मिट्टी ले आता हूँ। तुमको कष्ट करने की क्या जरूरत है?' उसने उस विचित्र मनुष्य को वहीं एक पेड़ की छाँह में बैठा दिया और वहाँ से चल दिया।

थोड़ी दूर जाने के बाद सुधाम अपने कुत्तों के साथ पहाड़ की एक कन्दरा में छिप गया। लेकिन वह जानता था कि वह अजीब आदमी जरूर उसे खोजता आएगा। इसलिए वह अपने धनुष-बाण निकाल कर तैयार बैठा था।

दूसरे दिन पहाड़ के नीचे से मेघ की सी गड़गड़ाहट होने लगी। थोड़ी ही देर में नीचे से विचित्र मनुष्य की आवाज आई। सुधाम ने तुरन्त दोनों कुत्तों को ललकार कर उस पर छोड़ दिया। दोनों भयंकर कुत्ते पलक मारते पहाड़ से उतरे और उस विचित्र मनुष्य पर टूट पड़े। उसी समय सुधाम ने गुफा से बाहर आकर धनुष पर तीर चढ़ाया और उस पर निशाना लगा कर मारना शुरू किया। वह अजीब आदमी कुत्तों के कारण पहाड़ पर नहीं चढ़ पाता था। भागने की गुञ्जाइश भी न थी। वह छटपटा कर नीचे गिर कर मर गया। कुत्तों ने थोड़ी ही देर में उसका सारा बदन चबा कर खा डाला। लेकिन उसका पैर जो पेड़ के तने सा था, उनसे चबाया

न जा सका। इसलिए वह वैसे ही रह गया।

तब सुधाम खुशी खुशी पहाड़ से उतर आया। उसे शक तो था ही कि इस पेड़ के तने में जरूर कुछ न कुछ रहस्य छिपा हुआ है। उसने एक कुल्हाड़ी लेकर उसको चीर डाला।

तुरन्त उस पेड़ के तने में से सैकड़ों गौएँ बाहर निकल आईं। उन सब को देख कर वह चकित हो गया। उन में एक कपिला गौ थी जो सबसे सुन्दर थी। उसे देख कर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह गाय पूँछ हिलाती हुई सुधाम के पास आई और अपनी भोली आँखें उठा कर उसकी तरफ ताकने लगी। सुधाम उस पर मुग्ध हो गया।

शीघ्र ही सुधाम अपने भाग्य पर इतराता हुआ, गायों को हाँक कर घर लौट चला। चलते चलते वह दोराहे वाले बरगद के नीचे जा पहुँचा। उसका भाई चित्रकेतु पहले ही वहाँ पहुँच गया था और बैठा बैठा उसकी राह देख रहा था। चित्रकेतु ने गायों के झुण्ड को देखा। उसकी नज़र कपिला गाय पर पड़ी। वह उसे हड़प लेने का उपाय सोचने लगा।

दोनों भाई थोड़ी देर तक बरगद के नीचे बैठ कर गप-शप करते रहे। दोनों बहुत थके हुए थे। सुधाम को थोड़ी ही देर में नींद आ गई। वह वहीं लेट गया और जल्द ही खुर्राटे लेने लगा। लेकिन चित्रकेतु की आँखें न झपकीं। बरगद की बगल में ही एक कुँआ था। चित्रकेतु को शैतानी सूझी। सुधाम को उठा कर उसने कुँए में डाल दिया और गायों को अपने घर ले चला।

सभी गाएँ उसके साथ चलने लगीं। लेकिन कपिला गाय बहुत कोशिश करने पर भी वहाँ से न टली। चित्रकेतु ने उसे मारा-पीटा भी। पर वह टस-से-मस न हुई। उसकी आँखों से आँसू गिर रहे थे और वह करुण स्वर से रँभा रही थी।

चित्रकेतु को अकेले घर लौटते देख पड़ोसियों ने उसे घेर लिया और सवालों की झड़ी लगा दी। वे उसके भाई के बारे में जानना चाहते थे। लेकिन चित्रकेतु ने कई बहाने बना कर सच्ची बात छिपा दी।

दूसरे दिन चित्रकेतु ने नौकरों को बुला कर कहा—'जाओ, बरगद के पेड़ के पास एक गाय छूट गई है। उसे हाँक लाओ!' नौकरों ने जाकर कपिला गाय के गले में रस्सी बाँधी और जबर्दस्ती घसीटने लगे। लेकिन गाय उन्हें खींच-खाँच कर कुँए पर ले गई। नौकरों ने कुँए में झाँका और सुधाम को देखा। उन्होंने तुरन्त उसे ऊपर निकाल लिया। सुधाम नौकरों और कपिला गाय को साथ लेकर घर की ओर चला। उसके आने की खबर पाते ही चित्रकेतु घर से भाग गया। गाँव वाले सभी उसको कोसने लगे। लेकिन सुधाम ने नौकरों को भेज कर उसे पकड़ मँगवाया। थर थर काँपता चित्रकेतु अपने भाई के सामने आ खड़ा हुआ। सुधाम ने उसे कुछ नहीं कहा। उलटे बड़े प्रेम से गले लगा कर बोला—'भाई! तुम अगर माँगते तो मैं अकेली कपिला ही क्यों—सारी गौएँ तुझे दे देता! इतनी सी बात के लिए तुमने ऐसा अनर्थ क्यों किया?'

भाई की बातें सुनते ही चित्रकेतु की आँखों से आँसू की धार बह निकली। वह भाई के पैरों पर पड़ गया और क्षमा माँगने लगा। सुधाम ने चित्रकेतु को उठा कर छाती से लगा लिया।

एक ऐसा समय था जब गिद्ध के पंख नहीं होते थे। इसलिए वह उड़ नहीं सकता था। उसे जानवरों के साथ साथ जमीन पर चल-फिर कर चारे की खोज करनी पड़ती। इस तरह करने में उसको बड़ी मुसीबत उठानी पड़ती थी।

तब गिद्ध ने भारी तप किया। तप से प्रसन्न होकर भगवान प्रकट हुए। भगवान को देखते ही उसने हाथ जोड़ कर कहा— 'देव! मुझे जमीन पर चलना पड़ता है। इसमे मुझको बहुत कष्ट उठाना होता है। इसलिए कोई ऐसा उपाय बता दीजिए जिससे मैं आसमान में उड़ सकूँ। मुझे भी पंख मिल जाएँ तो बड़ी कृपा हो!' उसने विनती की।

गिद्ध की प्रार्थना सुन कर ईश्वर ने उसे एक जादू की सुई दी और कहा— 'गिद्धराज! जाओ, मनचाहे पर चुन लाओ और उन्हें इस सुई से सीकर अपने शरीर में लगा लो! पंख सदा के लिए चिपक जाएँगे। तब तुम भी दूसरे पंछियों की तरह आसमान में उड़ने लगोगे।' यह वर देकर भगवान अन्तर्धान हो गए।

जादू की सुई की मदद से गिद्ध ने पंख तैयार कर लिए। अब वह भी आसमान में मन-माना विहार करने लगा। गिद्ध को इस तरह हवा में उड़ते देख कर उसकी सहेली मुरगी को भी आसमान में उड़ने की इच्छा हुई। उसने गिद्ध के पास जाकर अपनी अभिलाषा प्रकट कर दी।

उसकी बात सुन कर गिद्ध ने कहा— 'मुरगी रानी! मैंने बहुत दिन तक कड़ी तपस्या करके यह जादू की सुई पाई है।

इसलिए यह सुई मैं किसी को नहीं दे सकता। इसके सिवा जो चाहो माँगो! खुशी से दे दूँगा।'

मुरगी ने गिड़गिड़ा कर कहा—'इसके सिवा मेरी और कोई ख्वाहिश नहीं। इसलिए अगर तुम्हें दया हो तो मेरी इच्छा पूरी करो। बड़ी आस लगा कर आ. हूँ। तुम्हारे आगे हाथ पसारती हूँ। सिर्फ चार दिन के लिए वह सुई दे दो! काम पूरा होते ही मैं उसे सावधानी से तुम्हें लौटा दूँगी।'

गिद्ध 'नहीं' न कर सका। उसने सुई दे दी और बार बार चेता दिया कि कहीं खो न दो! मुरगी सुई लेकर बड़ी खुशी से फुदकती चली। लेकिन खुशी के जोश में सुई कहीं गिर गई। बहुत ढूँढ़ने पर भी नहीं मिली। मुरगी बावली हो गई। गिद्ध के पूछने पर वह क्या जवाब देगी!

चार पाँच दिन बाद गिद्ध ने अपनी सुई माँग भेजी। मुरगी कोई बहाना कर गई। गिद्ध ने कई बार उससे सुई माँगी। लेकिन वह रोज नए नए बहाने बनाती गई। बेचारी दिन भर जमीन कुरेदती रहती कि शायद सुई कहीं मिल जाए। लेकिन कहीं न मिली। उसका ढूँढ़ना आज भी बन्द नहीं हुआ है। गिद्ध समझ गया कि मुरगी उसकी सुई हड़प बैठी है और उसके साथ चालबाजी कर रही है।

यह सोच कर वह दोस्ती छोड़ कर उसका दुश्मन हो गया। तब से वह मुरगी और उसके बच्चों को देखते ही उन्हें झपट ले जाने की कोशिश करता है और इस तरह उसके वंश का नाश करके अपना बदला चुकाता है। और देखो—शरम की मारी मुरगी आज भी जमीन कुरेद-कुरेद कर सुई ढूँढ़ती रहती है!

ऊपर के नौ चित्रों में सब एक से दिखाई देते हैं। लेकिन वास्तव में दो कुछ फर्क-वाले हैं। बताओ तो देखें, वे दोनो कौन से हैं? अगर न बता सको तो जवाब के लिए ५४-वाँ पृष्ठ देखो।

खिलौने

बच्चों को खेलने में बहुत आनन्द आता है। जब वे खेलने में लग जाते हैं तो भूख-प्यास भी भुला देते हैं। खेलना बच्चों के स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। इसलिए बच्चों को अपनी खुशी से खेलने देना चाहिए। खेलना नीरोग और स्वस्थ बच्चों का चिह्न है। जो बच्चे खेलते नहीं और मन मारे बैठे रहते हैं वे अकसर बीमार हो जाते हैं। इसके अलावा बच्चों को आपस में हिल-मिल कर खेलने देने से उनमें भाईचारे का भाव पैदा होता है। जो बच्चे दूसरों से हिलते-मिलते नहीं वे चिड़चिड़े मिजाज के हो जाते हैं। अकेले बैठे रहने से बहुत सी बुरी आदतें भी सीख लेते हैं। उनके मन में अनेक गुत्थियाँ पड़ जाती हैं और उनका मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। कहा भी है—'खाली दिमाग शैतान का कारखाना है।' बच्चों को सुन्दर, रंगीन खिलौने देने चाहिए। उन्हें रंगीन चीज़ें पसन्द भी आती हैं। हमारे देश में तरह तरह के काठ के खिलौने मिलते हैं। इनके अलावा आजकल सेल्यूलाइड और प्लास्टिक के खिलौने भी बनने लगे हैं। ये खिलौने ज्यादातर सस्ते ही होते हैं। लेकिन खिलौनों पर ज्यादा पैसा खर्च करना ठीक नहीं। ऐसी चीज़ें कभी बच्चों के हाथ नहीं लगने देनीं चाहिए, जिनसे वे अपने आप को हानि पहुँचा सकें; जैसे चाकू, दिया-सलाई इत्यादि। इसलिए बच्चों के खेलने के बारे में लापरवाही ठीक नहीं। धूल में अनेकों संक्रामक रोगों के कीटाणु छिपे रहते हैं। इसलिए खेलने के बाद बच्चों को तुरन्त नहला-धुला कर साफ कपड़े पहना देने चाहिए। इसके बारे में जितनी सावधानी से काम लिया जाए उतना ही अच्छा।

तुम्हारी दीदी
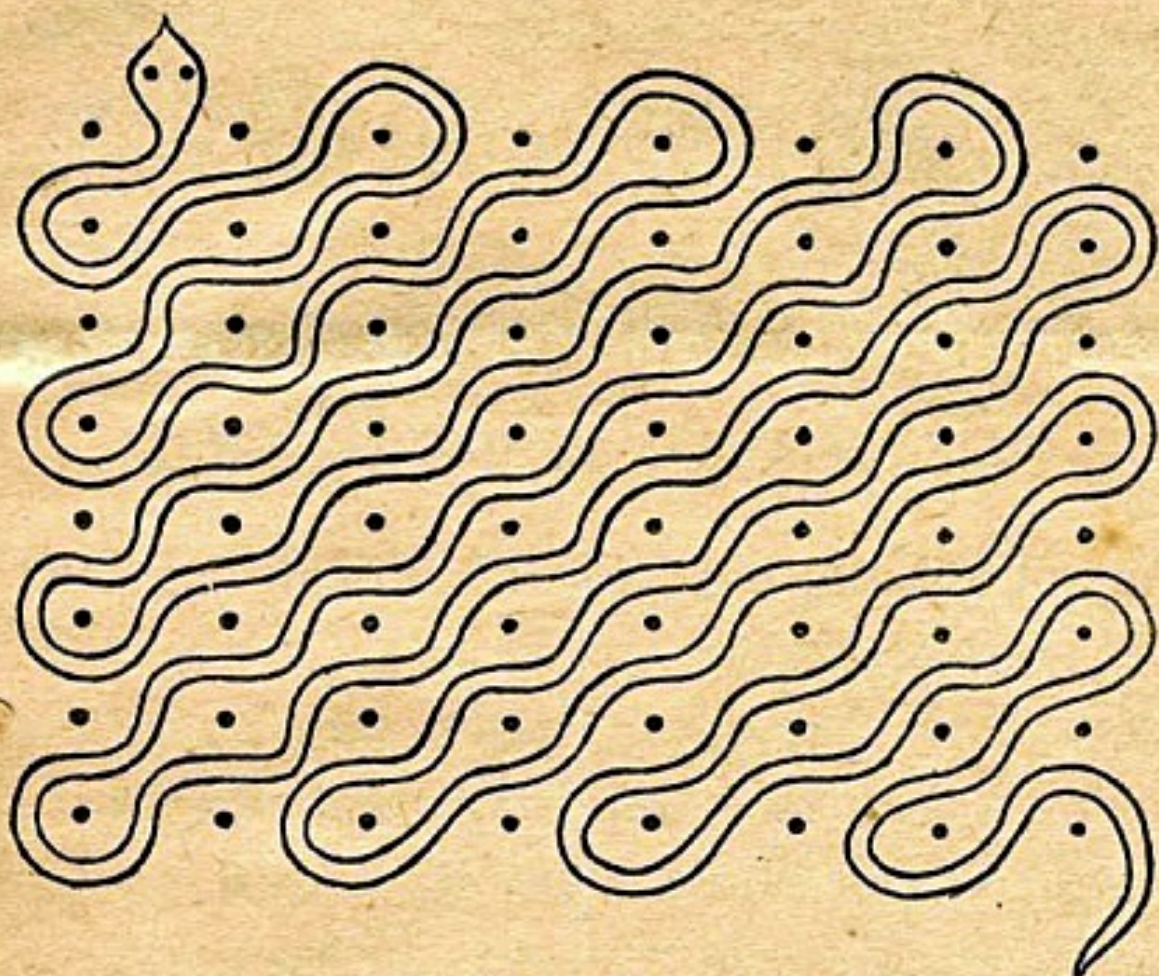
शीला देवी
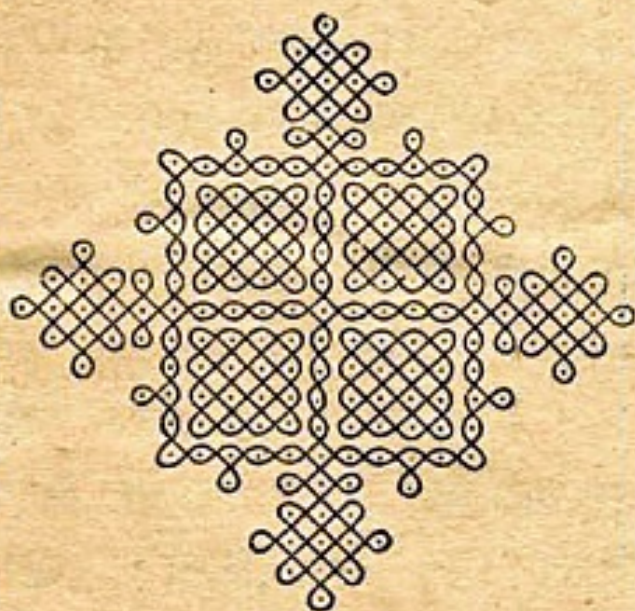
प्रमीला
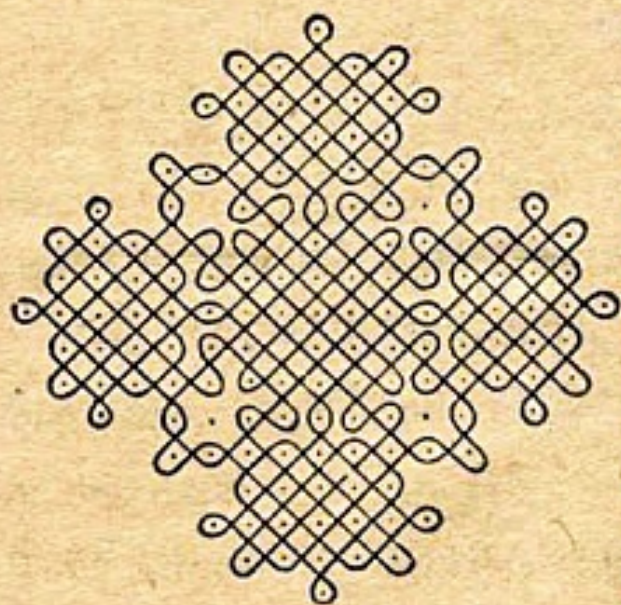
प्रभा

कोट पर गुलाब का फूल दिखाना !

आज तक तुमने जितने तमाशे करना सीखा है यह उन सब से आसान है। तुम दर्शकों के सामने खड़े होकर कहोगे—'देखिए! मैं अपने कोट के बटन के खाली छेद में एक जादू का गुलाब दिखाऊँगा।' बस, इतना कहते ही एक गुलाब का फूल तुम्हारे कोट पर दिखाई देने लगेगा। लो, इसका रहस्य सुनो—

रेशम या सेल्यूलाइड के बने हुए गुलाब के फूल बाजार में बिकते हैं। वैसा एक फूल खरीद लो। जादूगरों के काम आने वाला एक काला धागा भी ले लो। तुम उस गुलाब में यह धागा बाँध दो। तमाशा करने के लिए आते वक्त काला कोट पहन कर आओ। गुलाब का फूल कोट की जेब में रख लो और उससे बँधे हुए काले धागे का छोर कोट के बटन के छेद में से पिरो कर बाहर ला रखो। इसी छोर में एक फाँस लगा दो जिसमें तुम्हारा अँगूठा घुस सके। चित्र देखो, यह तुम्हारी समझ में आ जाएगा। तुम इस तरह तैयार होकर दर्शकों के सामने आओगे और कहोगे—'देखिए, मेरे कोट के बटन का छेद बिलकुल खाली है।' दर्शक लोग तुम्हारी ओर देखेंगे। लेकिन उन्हें कुछ न दिखाई पड़ेगा। धागे का रंग काला होने के कारण वह कोट के काले रंग में एक हो जाएगा। इसलिए वे तुम्हारी बात पर सिर हिला देंगे। तब तुम कहोगे—'अच्छा! अब आप लोग टकटकी लगा कर मेरी ओर देखिए! क्या तमाशा होता है?' यह कह

कर धागे की फाँस में अँगूठा घुसा कर एक बार खींच लो। तुरंत गुलाब का फूल जेब से निकल कर कोट के छेद में लग जाएगा। बस, सब लोग मुँह बाए देखते रह जाएँगे कि यह फूल कहाँ से आ गया ! यह तमाशा करने में धागा खींचते वक्त सावधान रहना

चाहिए। दर्शकों को यह शक न होने देना चाहिए कि तुम कोई चीज खींच रहे हो।

[जो इस संबंध में प्रोफेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे उनको 'चन्दामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेज़ी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार. मेजीशियन
पो. बा. 7878 कलकत्ता 12]

हमारा भगवान !

[कमल साहित्यालङ्कार]

*

हम हैं बालक देश पुजारी
देश हमारा है भगवान।
इसकी मिट्टी में हम खेलें
लाड़-प्यार के देखें मेले
खाएँ मीठे मेवे - केले
इसमें चलती रहती रेलें
पंछी भी उड़ इसका करते
दूर हवा में गौरव-गान।
देश हमारा है भगवान!
जनता की सेवा करने को
दुखियों के संकट हरने को
सुन्दर स्वस्थ सदा रहने को
शाँति-काँति से जग भरने को
लेते हैं हम निज माता से
ऊँची शिक्षा का शुभ दान।
देश हमारा है भगवान!
हम नित ऐसे करें काम जो
देश पुजारी करते आए।
बल-विद्या हो शक्ति हमारी
जिससे रिपुगण सब दब जावें।
ऊँचा हो भारत का झण्डा
कुल-गुरु नेता का हो मान।
देश हमारा है भगवान!

संकेत

बाएँ से दाएँ :

१. बाण

३. शिखा

५. साधारण

८. जोतने का औजार

१०. नदियों का उमड़ना

११. सीना

१२. दोष

१३. जान

१५. हिफाजत

१७. सैनिक

१९. मुसलमानों का तीर्थ

२०. चित्तौर के राजा

■	1 ती	2	■	3	टी	■
4	■	5	6		■	7
8	9	■		■	10	
■	11	क्ष	■	12 ऐ		■
13		■	14	■	15	16
	■	17		18	■	
■	19 म		■	20	णा	■

ऊपर से नीचे :

२. लक्ष्मी

३. औरतों की कुरती

४. शेर

६. माथा

७. मूर्ख

९. नमक

१०. अकबर का दादा

१३. अवसर

१४. दया

१६. अकाल

१७. मुद्रा

१८. रव
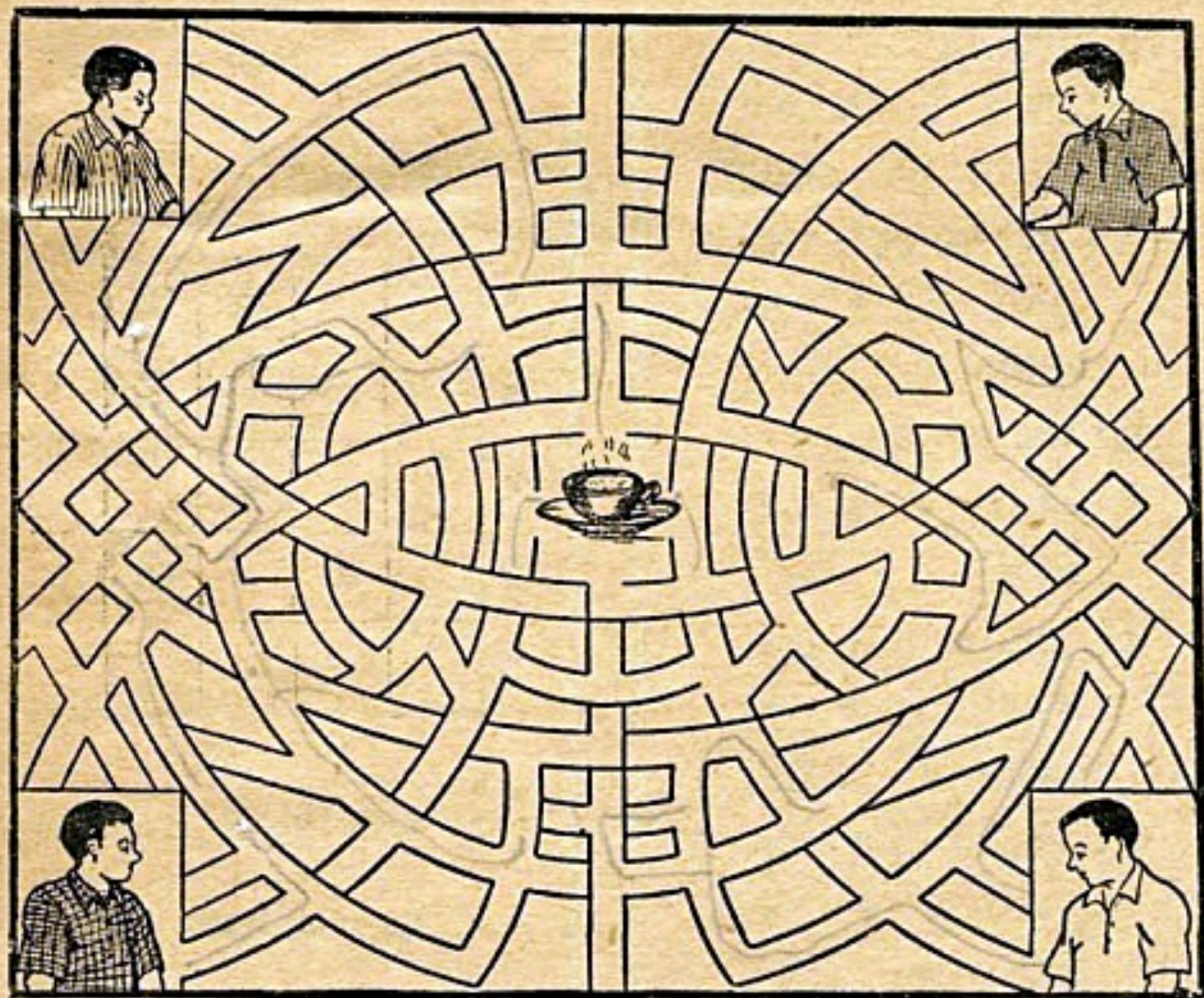
ऊपर के वर्ग के बीच में रखे हुए प्याले तक पहुँचने का रास्ता इन चारों लड़कों में से सिर्फ़ एक ही को मालूम है। बताओ तो देखें, वह लड़का कौन है?

मैं कौन हूँ ?

★

मैं एक मशहूर मुगल बादशाह हूँ जिसका नाम आप सबने सुना होगा।

मेरे नाम का पहला अक्षर
औरत में है, पर
रमणी में नहीं।

मेरे नाम का दूसरा अक्षर
रंगमञ्च में है, पर
नाटक में नहीं।

मेरे नाम का तीसरा अक्षर
गजराज में है, पर
पशुराज में नहीं।

मेरे नाम का चौथा अक्षर
जेवर में है, पर
गहने में नहीं।

मेरे नाम का पाँचवाँ अक्षर
बयार में है, पर
समीर में नहीं।

क्या तुम बता सकते हो कि मैं कौन हूँ?

अगर न बता सको तो जवाब ५४-वें पृष्ठ में देखो।

विनोद-वर्ग

✱

नीचे लिखे संकेतों की सहायता से इस वर्ग को पूरा करो।

१			लो		
२		लो		लो	
३			लो		
४		लो		लो	
५			लो		

१. हरिण के से नयन वाली

२. प्रकाश की दुनिया . . .

३. पाँडवों के गुरु . . .

४. सुन्दर कोमलता . . .

५. देखना . . . . . .

अगर पूरा न कर सको तो जवाब ५४-वें पृष्ठ में देखो।

तुम्हारी आँखें तुम्हें धोखा तो नहीं देतीं ?
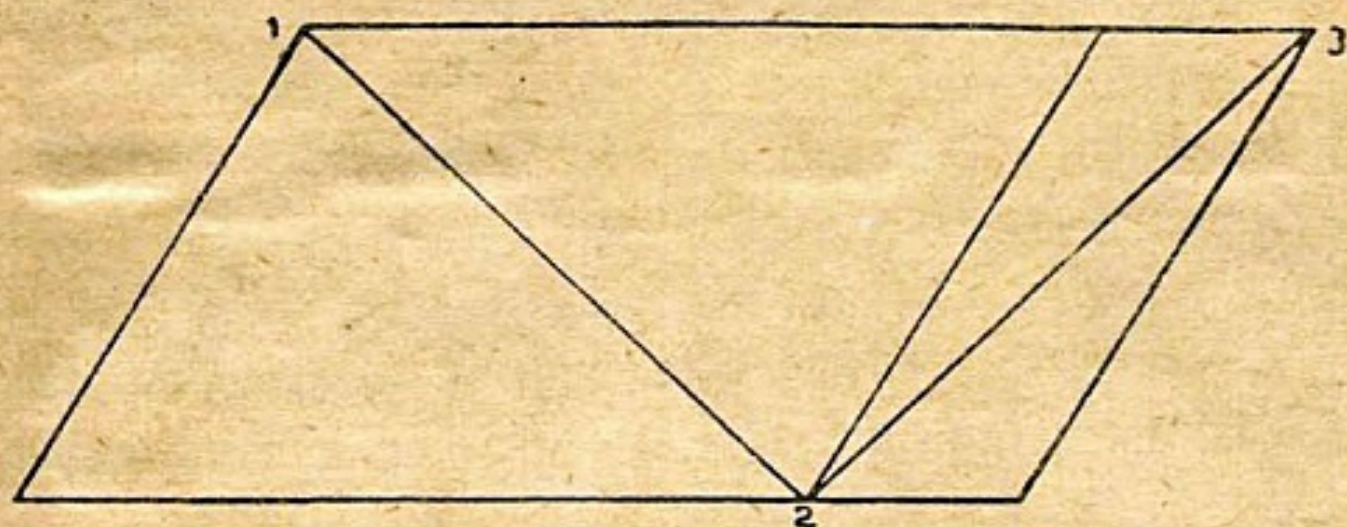
ऊपर की तस्वीर देखो। इसमें १—२ और २—३ दो रेखाएँ हैं। इन दोनों में कौन सी रेखा ज्यादा लम्बी है बिना नापे बताओ तो! अगर न बता सको तो जवाब ४५-वें पृष्ठ में देखो।
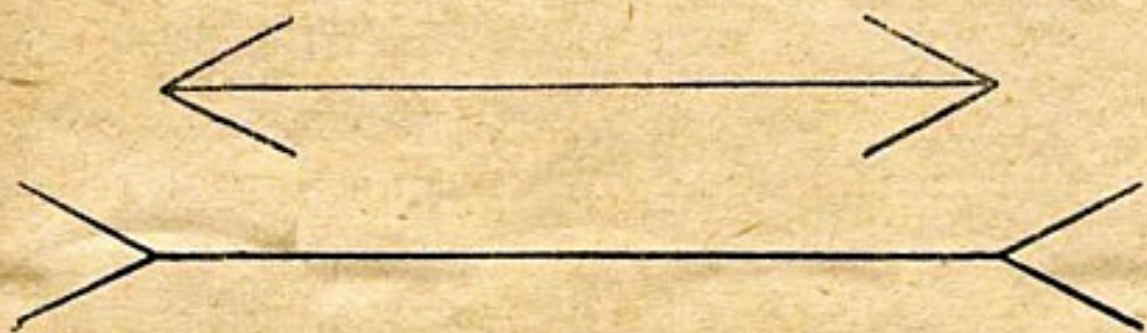
बताओ तो, ऊपर की दोनों रेखाओं में कौन सी रेखा ज्यादा लम्बी दिखाई देती है? नीचे वाली रेखा ही न? लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। नाप कर देखो तो? नहीं तो जवाब ५४-वें पृष्ठ में देखो!

*

चन्दामामा पहेली का जवाब :

■	1 ती	2 र	■	3 चो	टी	■
4 सिं	■	5 मा	6 मू	ली	■	7 मू
8 ह	9 ल	■	र्ध	■	10 बा	ढ़
■	11 व	क्ष	■	12 ऐ	ब	■
13 प्रा	ण	■	14 क्र	■	15 र	16 क्षा
यः	■	17 सि	पा	18 ही	■	म
■	19 म	क्का	■	20 रा	णा	■

'मैं कौन हूँ' का जवाब :

'औरंगजेब'

विनोद-वर्ग का जवाब :

स्व	ग	लो	च	नी
आ	लो	क	लो	क
ऋ	षि	लो	म	ब
स	लो	नी	लो	च
अ	व	लो	क	न

९ चित्रों वाली पहेली का जवाब : ३ और ४ नंबर वाले दोनों चित्र अलग हैं।

यह हिसाब करो तो ?

*

एक आदमी मद्रास से अपनी मोटर पर चढ़ कर चला। उसने अपनी याला का एक तिहाई हिस्सा ३० मील फी घण्टे के हिसाब से तै किया। इतने में उसकी मोटर बिगड़ गई। तब उसने एक बस पर चढ़ कर अपनी याला का आधा हिस्सा १५ मील फी घण्टे के हिसाब से तै किया। उसके दुर्भाग्य से बस के टैर में छेद हो गया। लेकिन संयोग से वहीं एक सैकिल की दूकान थी। उसने एक सैकिल भाड़े पर लेकर याला का बाकी हिस्सा १० मील फी घण्टे की रफ्तार से तै किया। बताओ तो देखें वह कुल कितनी दूरी तक गया?

अगर न मालूम हो तो जवाब के लिए उलट कर देखो।

'तुम्हारी आँखें तुम्हें धोखा तो नहीं देतीं?' का जवाब : १-२ और २-३ दोनों बराबर हैं। दोनों रेखाएँ बराबर हैं।

[उल्टा छपा हुआ:] उसे याला पूरी करने में १ घण्टा ५० मिनट लगे। कुल दूरी ३० मील।

इस तस्वीर को रंग कर अपने पास रख लेना और अगले महीने के चन्दामामा के पिछले कवर पर के चित्र से उसका मिलान करके देख लेना।

चन्दामामा हर महीने पहली तारीख के पहले ही डाक में भेज दिया जाता है। इसलिए जिनको चन्दामामा न पहुँचा हो वे तुरंत डाक घर में पूछताछ करें और फिर हमें सूचित करें। १०-वीं तारीख के बाद हमें पहुँचने वाली शिकायतों पर कोई ध्यान न दिया जाएगा। कुछ लोग तीन-तीन महीने बाद हमें लिखते हैं। पत्र-व्यवहार में ग्राहक-संख्या का अवश्य उल्लेख करें।

★

व्यवस्थापक : 'चन्दामामा'

पो. बा. नं. १६८६ :: मद्रास-१

Controlling Editor: SRI CHAKRAPANI

Printed and Published by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press, Madras.

Photo by B. N. Prasad

गया

CHANDAMAMA (Hindi) DEC. 1950 Regd. No. M. 5452

चंचल मीन